दैनिक

लद्दाख टुडे

MALABAR
GOLD & DIAMONDS

Title Code: LDHIN00001 | वर्षः 02 अंकः 306 | जम्मू, कश्मीर, लेह, सोमवार 29 दिसम्बर 2025 | पृष्ठः 8 | मूल्य 2 रुपए

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान का कबूलनामा, भारत के ऑपरेशन सिंदूर ने रावलपिंडी एयरबेस को किया तबाह, 80 ड्रोन हमलों का दावा

नई दिल्ली। पाकिस्तान सरकार ने आखिरकार स्वीकार कर लिया है कि इस साल मई में भारतीय सेना द्वारा किए गए श्ऑपरेशन सिंदूरश में उसके सैन्य बुनियादी ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचा था। पाकिस्तान के विदेश मंत्री और उप–प्रधानमंत्री इशाक डार ने शनिवार को साल के अंत में हुई प्रेस ब्रीफिंग में पुष्टि की कि भारत ने रावलपिंडी स्थित नूर खान एयरबेस को सफलतापूर्वक निशाना बनाया था।

इशाक डार ने बताया कि भारत ने इस ऑपरेशन के दौरान बड़े पैमाने पर ड्रोन हमले किए थे। बयान में उन्होंने कहा, भारत ने 36 घंटों के भीतर कम से कम 80 ड्रोन पाकिस्तान की ओर भेजे थे। पाकिस्तान ने दावा किया कि उसने 79 ड्रोन मार गिराए, लेकिन एक ड्रोन उनके डिफेंस सिस्टम को चकमा देकर नूर खान एयरबेस के मिलिट्री इंस्टॉलेशन से टकरा गया। इस हमले में न केवल सैन्य ढांचे को नुकसान पहुंचा, बल्कि ■ शेष पेज 2...

सिक्किम में यूपी के एक पर्वतारोही की मौत

नई दिल्ली। सिक्किम के प्रसिद्ध गोएचाला पर्वतारोहण मार्ग पर उत्तर प्रदेश के 45 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। मृतक की पहचान सूरज कुमार तिवारी के रूप में हुई है। वह अपने दो दोस्तों के साथ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल खांगचेंद्जोंगा राष्ट्रीय उद्यान में आठ दिन की गोएचाला पर्वतारोहण यात्रा पर गया था।

पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि उसने बृहस्पतिवार को चढ़ाई शुरू की थी तभी सुबह करीब नौ बजे कोक्चुरोंग शिविर के पास अचानक उसकी तबीयत खराब हो गई और उसमें लकवे जैसे लक्षण दिखाई देने लगे। उन्होंने बताया कि साथी पर्वतारोहियों और गाइड ने उसे प्राथमिक उपचार दिया।

स्थानीय लोगों और अन्य पर्वतारोहियों की मदद से उसे युकसोम की ओर ले जाए जाने के दौरान बृहस्पतिवार शाम करीब आठ बजे 12,100 फुट की ऊंचाई पर स्थित फेदांग के पास उसकी मौत हो गई। उसका शव शुक्रवार को ग्यालशिंग जिला अस्पताल लाया गया। पोस्टमार्टम■ शेष पेज 2...

मौसम

------ जम्मू ---------
अधिकतम – 17°C
न्यूनतम – 11°C
------- श्रीनगर -------
अधिकतम – 11°C
न्यूनतम – -3°C

मन की बात : पीएम मोदी ने कहा 2025 भारत के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धियों का साल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि 2025 भारत के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धियों का साल था, क्योंकि उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह हर भारतीय के लिए गर्व का प्रतीक बन गया और दुनिया को दिखाया कि देश अपनी सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करता है।

2025 में अपने मासिक मन की बात संबोधन में, जो साल का आखिरी संबोधन था, मोदी ने कहा कि बीते साल में देश का प्रभाव हर जगह दिखाई दिया। उन्होंने कहा, 2025 भारत के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धियों का साल था। चाहे राष्ट्रीय सुरक्षा हो, खेल हो, वैज्ञानिक नवाचार हो या दुनिया के सबसे बड़े मंच हों, भारत का प्रभाव हर जगह दिखाई दिया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, श्मां भारतीश (भारत माता) के प्रति प्रेम और भक्ति की तस्वीरें देश के हर कोने से सामने आईं और लोगों ने अपनी भावनाओं और कृतज्ञता को अपने अनोखे तरीकों से व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ऑपरेशन सिंदूर हर भारतीय के लिए गर्व का प्रतीक बन गया। दुनिया ने साफ देखा कि आज का भारत अपनी सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करता है।

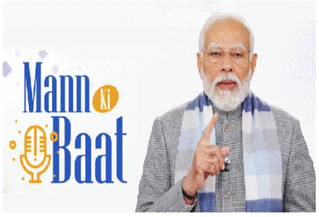

भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में 7 मई को पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर ऑपरेशन सिंदूर के तहत सटीक हमले किए थे, जिसमें 26 लोग मारे गए थे। भारत और पाकिस्तान 10 मई को सैन्य टकराव खत्म करने पर सहमत हुए। मोदी ने कहा कि यही भावना तब भी देखी गई जब राष्ट्रीय गीत श्वंदे मातरमश ने 150 साल पूरे किए।

उन्होंने कहा, श्मैंने आपसे हैशटैग श्रुटंदकमडंजंतउ150श का इस्तेमाल करके अपने संदे.श और सुझाव साझा करने का आग्रह किया था, और हमारे साथी नागरिकों ने इस अभियान में बहुत उत्साह से भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि 2025 खेलों के लिए वास्तव में एक यादगार साल रहा है, जिसमें पुरुष क्रिकेट टीम ने आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीती और महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार विश्व कप जीता। इसके अलावा, भारत की बेटियों ने महिला ब्लाइंड टी20 विश्व कप जीतकर इतिहास रचा।

उन्होंने कहा कि एशिया कप टी20 में शानदार जीत के बाद तिरंगा गर्व से ऊंचा लहराया और पैरा–एथलीट विश्व चौंपियनशिप में ढेर सारे पदक घर लाए। मोदी ने यह भी कहा कि भारत ने साइंस और स्पेस के क्षेत्र में एक बड़ी छलांग लगाई है, और शुभांशु शुक्ला इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुं.चने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। उन्होंने कहा कि आज दुनिया बड़ी उम्मीद से भारत की ओर देख रही है और इस उम्मीद का सबसे बड़ा कारण देश की युवा शक्ति है।

उन्होंने कहा, दुनिया भर के देश साइंस में हमारी उपलब्धियों, लगातार इनोवेशन और टेक्नोलॉजी के विस्तार से बहुत ■ शेष पेज 2...

एलजी ने क्लस्टर यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू की तीसरी यूनिवर्सिटी काउंसिल मीटिंग की अध्यक्षता की

लद्दाख टुडे ब्यूरो

जम्मू। लेफ्टिनेंट गवर्नर मनोज सिन्हा ने रविवार को लोक भवन, जम्मू में क्लस्टर यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू की यूनिवर्सिटी काउंसिल की तीसरी मीटिंग की अध्यक्षता की। लेफ्टिनेंट गवर्नर, जो यूनिवर्सिटी के चांसलर भी हैं, ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उच्च शिक्षा संस्थानों को इनोवेशन, रोज़गार और उद्यमिता पर ध्यान देना चाहिए, साथ ही यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि शैक्षणिक पहल क्षेत्रीय और राष्ट्रीय विकास ज़रूरतों के अनुरूप हों। उन्होंने यूनिवर्सिटी को उभरती हुई शैक्षणिक और औद्योगिक मांगों को पूरा करने के लिए इंटीग्रेटेड और प्रोफेशनल कार्यक्रमों को

मज़बूत करने की सलाह दी।

यूनिवर्सिटी काउंसिल, जिसकी मीटिंग लेफ्टिनेंट गवर्नर की अध्यक्षता में हुई, ने कई महत्वपूर्ण शैक्षणिक और प्रशासनिक प्रस्तावों को सैद्धांतिक मंजूरी दी। इसने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च)–2020 के अनुरूप प्रमुख सुधारों की समीक्षा की और पुष्टि की, जिसमें नए ■ शेष पेज 2...

राष्ट्रपति मुर्मू ने आईएनएस वाघशीर पर पनडुब्बी यात्रा की

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को पश्चिमी समुद्री तट पर भारतीय नौसेना की स्वदेशी रूप से निर्मित फ्रंटलाइन पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर पर यात्रा की।

मुर्मू पनडुब्बी यात्रा करने वाली दूसरी राष्ट्रपति हैं। फरवरी 2006 में, एपीजे अब्दुल कलाम ने प्छै सिंधु रक्षक पर पनडुब्बी यात्रा का अनुभव किया था।

अधिकारियों ने बताया कि नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने राष्ट्रपति मुर्मू का साथ दिया, जो सशस्त्र बलों की सर्वोच्च कमांडर भी है, कर्नाटक

में कारवार नौसैनिक अड्डे से कलवरी क्लास पनडुब्बी में यात्रा के दौरान। राष्ट्रपति ने नौसैनिक वर्दी पहनकर पनडुब्बी में प्रवेश करने से पहले नौसैनिक कर्मियों को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। उन्होंने आईएनएस वाघशीर के चालक दल के साथ बातचीत भी की और उनके समर्पण की सराहना की, साथ ही स्वदेशी पनडुब्बी को भारतीय नौसेना की पेशेवर उत्कृष्टता और युद्ध की तैयारी का एक शानदार उदाहरण बताया।

राष्ट्रपति सचिवालय ने कहा, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पश्चिमी समुद्री तट पर प्छै वाघशीर पर एक डूबी हुई यात्रा की। इसमें कहा गया है कि राष्ट्रपति को भारत की समुद्री रणनीति में पनडुब्बी शाखा की भूमिका, और परिचालन क्षमताओं के साथ–साथ राष्ट्रीय समुद्री हितों की रक्षा में योगदान के बारे में जानकारी दी गई। इसमें कहा गया ■ शेष पेज 2...

खाप पंचायत ने 18 से कम उम्र के बच्चों के मोबाइल फोन रखने पर प्रतिबंध लगाया

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में हुई खाप पंचायत में 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को स्मार्टफोन रखने और सार्वजनिक स्थानों पर हाफ पैंट पहनने पर रोक लगाने का निर्णय किया गया। साथ ही पंचायत में बारात घर में विवाह के आयोजन पर यह कहते हुए आपत्ति की गई कि विवाह गांवों और घरों में होने चाहिए।

खाप ने लड़कों के लिए कुर्ता पायजामा और लड़कियों के लिए सलवार कुर्ता की वकालत की। थाम्बा पट्टी मेहर देशखाप के चौधरी बृजपाल सिंह और खाप चौधरी सुभाष चौधरी ने

पंचायत में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि खाप चौधरियों का मानना है कि लड़के और लड़कियां समाज में समान है और अनुशासन के नियम दोनों पर समान रूप से लागू होने चाहिए।

पंचायत का मत था कि लड़कों द्वारा हाफ पैंट पहनकर सार्वजनिक स्थानों पर घूमना सामाजिक मर्यादाओं के विपरीत है और इससे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पंचों ने स्पष्ट किया कि 18 वर्ष से कम उम्र के लड़कों को स्मार्टफोन देना उचित नहीं है। शादी–विवाह से जुड़े फैसलों पर पंचायत में कहा गया कि बारात घर में होने वाली शादियों से पारिवारिक जुड़ाव कमजोर होता है और इससे वैवाहिक संबंधों में तनाव पैदा होता है। इस कारण शादियां गांव और घरों में ही संपन्न होनी चाहिए। हालांकि पंचायत ने व्हाट्सऐप के माध्यम से शादी के निमंत्रण कार्ड ■ शेष पेज 2...

दिल्ली में 20 हजार जवान संभालेंगे नए साल का मोर्चा नियमों का उल्लंघन करने पर होगी कठोर कार्रवाई

नई दिल्ली। नए साल के स्वागत के लिए राष्ट्रीय राजधानी पूरी तरह तैयार है, लेकिन इस दौरान सुरक्षा और कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए दिल्ली पुलिस ने विशेष इंतजाम किए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि शराब पीकर गाड़ी चलाने और यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर इस बार कड़ी नजर रखी जाएगी।

नए साल की पूर्व संध्या पर दिल्ली की सड़कों, बाजारों और मॉल के आसपास दिल्ली

पुलिस, ट्रैफिक पुलिस और अर्धसैनिक बलों के लगभग 20,000 जवान तैनात रहेंगे। हरियाणा ■ शेष पेज 2...

एनआईए की एंटी–टेरर कॉन्फ्रेंस खत्म हुई, एचएम शाह ने राज्यों को एक जैसा एटीएस लागू करने का दिया निर्देश

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आतंकवाद के प्रति ज़ीरो टॉलरेंस के कड़े निर्देश के बीच, नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (NIA) की 5वीं एंटी–टेरर कॉन्फ्रेंस यहां नई दिल्ली में खत्म हुई। इस कॉन्फ्रेंस में भारत की एंटी–टेरर क्षमता को बढ़ाने पर ज़ोर दिया गया, जिसे एक मॉडल एटीएस स्ट्रक्चर से सपोर्ट मिला, जिसे केंद्र और राज्य की सुरक्षा और जांच एजेंसियों के बीच तालमेल बढ़ाने और रियल–टाइम में आसानी से जानकारी का

आदान–प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

कॉन्फ्रेंस में केंद्र सरकार ने किसी भी रूप में आतंकवाद को बर्दाश्त न करने की अपनी पॉलिसी और देश के एंटी–टेरर सिस्टम को मज़बूत करने के अपने वादे को दोहराया। कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन शुक्रवार को केंद्रीय ■ शेष पेज 2...

जम्मू में जेके पुलिस द्वारा आयोजित 'रन फॉर यूनिटी' मैराथन में 8,000 से ज़्यादा लोगों ने लिया हिस्सा

लद्दाख टुडे ब्यूरो

जम्मू। अधिकारियों ने बताया कि जम्मू और कश्मीर पुलिस द्वारा रविवार को यहां आयोजित 'रन फॉर यूनिटी' मैराथन में आठ से 80 साल की उम्र के 8,000 से ज़्यादा धावकों ने हिस्सा लिया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि मैराथन को अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक मुख्यालय, एम के सिन्हा और ।क्ळच आर्म्ड आनंद जैन ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और यह शहर के कई रास्तों से गुज़रते हुए गुलशन ग्राउंड में शुरुआती पॉइंट पर खत्म हुई।

उन्होंने बताया कि इसमें विभिन्न शिक्षण संस्थानों के छात्र, खेल निकायों के सदस्य, पुलिस और वरिष्ठ नागरिक शामिल थे। प्रवक्ता ने बताया कि ।क्ळ मुख्यालय ने अलग–अलग कैटेगरी के विज.ेताओं को नकद पुरस्कार और सर्टिफिकेट दिए, साथ ही सभी प्रतिभागियों ■ शेष पेज 2...

बीएसएफ ने नकारा बांग्लादेशी पुलिस का दावा, घुसपैठ की खबरों को बताया झूठ

नई दिल्ली। मेघालय में तैनात सुरक्षा एजेंसियों ने बांग्लादेश पुलिस के उन दावा.ें को सिरे से खारिज कर दिया है, जिसमें कहा गया था कि इंकलाब मंच के नेता शरीफ उस्मान हादी के हत्यारे भारत में घुस आए है। सीमा सुरक्षा बल ने इन खबरों को पूरी तरह निराधार और भ्रामक बताया है।

मेघालय फ्रंटियर के बीएसएफ प्रमुख ओ.पी. उपाध्याय ने स्पष्ट किया कि अंतरराष्ट्रीय सीमा पार कर किसी भी व्यक्ति के भारत आने का कोई प्रमाण नहीं मिला ■ शेष पेज 2...

एनडीपीएस मामलों में ड्रग तस्करों की 2 करोड़ रूपये की संपत्ति अटैच

लद्दाख टुडे ब्यूरो

उधमपुर (संजीव शर्मा)। मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई में, उधमपुर पुलिस ने रेंबल पुलिस स्टेशन में दर्ज मामलों के संबंध में एनडीपीएस अधिनियम की धारा 68(एफ) के तहत मादक पदार्थों के तस्करों से संबंधित लगभग 2 करोड़ रुपये की अचल और चल संपत्तियों को जब्त ■ शेष पेज 2...

आरक्षण विवादः मार्च से पहले सांसद रुहुल्लाह मेहदी को घर में किया नज़रबंद

लद्दाख टुडे ब्यूरो

बडगाम। अधिकारियों ने रविवार को सेंट्रल कश्मीर के बडगाम जिले में सांसद आगा सैयद रुहुल्लाह मेहदी को घर में नज़रबंद करके श्रीनगर में आरक्षण मुद्दे पर होने वाले छात्रों के विरोध प्रदर्शन को नाकाम कर दिया।

जानकारी के अनुसार, ओपन मेरिट कैटेगरी के छात्रों को श्रीनगर के पोलो व्यू में इकट्ठा होना था, जहाँ से गुपकार रोड की ओर एक विरोध मार्च निक.ालने की योजना थी। इस प्रदर्शन का नेतृत्व रुहुल्लाह को करना था, जो मौजूदा आरक्षण नीति में सुधार की मांग कर रहे छात्रों का समर्थन कर रहे हैं।

हालांकि, तय विरोध प्रदर्शन से पहले, अधिकारियों ने सांसद को घर में नज़रबंद कर दिया, जिससे उन्हें मार्च में हिस्सा लेने या उसका नेतृत्व करने से रोक दिया गया। रुहुल्लाह ने अपनी नज़रबंदी की पुष्टि करते हुए कहा कि उन्हें उनके घर में ही बंद कर दिया गया है। रुहुल्लाह ने पुष्टि करते हुए कहा, न तो किसी को मेरे घर में आने दिया जा रहा है और न ■ शेष पेज 2...

डीआईजी आरपी रेंज ने पुंछ में इंटेलिजेंस, सिक्योरिटी और क्राइम रिव्यू बैठक की

लद्दाख टुडे ब्यूरो

पुंछ। डीआईजी राजौरी–पुंछ रेंज तजिंदर सिंह ने आज डिस्ट्रिक्ट पुलिस ऑफिस पुंछ के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक बड़ी इंटेलिजेंस, सिक्योरिटी और क्राइम रिव्यू मीटिंग की अध्यक्षता की।

शुरुआत में एसएसपी पुंछ शफकत हुसैन ने डीआईजी आरपी रेंज को जिले की मौजूदा सिक्योरिटी और इंटेलिजेंस स्थिति के बारे में जानकारी दी। जिले भर में क्राइम प्रोफ़ाइल, मामलों के

निपटारे और चल रही जांच की कोशिशों के बारे में भी डिटेल में चर्चा हुई।

रिव्यू के दौरान पुलिस स्टेशनों और पुलिस चौकियों पर ■ शेष पेज 2...

Created by Universal Document Converter

शेष पेज 1 से

मन की बात : पीएम ...

प्रभावित हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि 2025 में भारत में चीता. की संख्या बढ़कर 30 से ज़्यादा हो गई है। साल भर में हुए अलग–अलग कार्यक्रमों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 2025 में आस्था, संस्कृति और भारत की अनोखी विरासत सब एक साथ आए।

उन्होंने कहा, ष्साल की शुरुआत में प्रयागराज महाकुंभ ने पूरी दुनिया को हैरान कर दिया। साल के आखिर में अयोध्या में राम मंदिर में ध्वजारोहण समारोह ने हर भारतीय को गर्व से भर दिया। मोदी ने कहा कि स्वदेशी को लेकर भी सभी में उत्साह साफ दिख रहा था और लोग सिर्फ़ वही सामान खरीद रहे हैं जिसमें किसी भारतीय का पसीना और भारतीय मिट्टी की खुशबू हो।

उन्होंने कहा, आज हम गर्व से कह सकते हैं कि 2025 ने भारत को और भी ज़्यादा आत्मविश्वास दिया है। यह भी सच है कि इस साल हमें कई जगहों पर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ा। अब देश नई उम्मीदों और नए संकल्पों के साथ 2026 में आगे बढ़ने के लिए तैयार है।

एलजी ने क्लस्टर ...

अंडरग्रेजुएट पाठ्यक्रम ढांचे को अपनाना, नए शैक्षणिक कार्यक्रमों की शुरुआत और लचीलेपन और रोज़गार क्षमता को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम संरचनाओं में संशोधन शामिल है।

काउंसिल ने चार–वर्षीय इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (ष्जम्च्), एम.ए. शिक्षा, मास्टर्स इन परफॉर्मिंग आर्ट्स, पीजी भूगोल और पीजी स्तर पर साइबर सुरक्षा जैसे नए कार्यक्रमों की शुरुआत को मंजूरी दी, साथ ही घटक कॉलेजों में नए माइनर, कौशल और वैल्यू–एडेड पाठ्यक्रमों को भी मंजूरी दी। छात्र–केंद्रित उपायों जैसे खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अतिरिक्त क्रेडिट देना, डळ्े के लिए संशोधित क्रेडिट मानदंड और समावेशी परीक्षा और प्रवेश नीतियों की भी पुष्टि की गई।

लेफ्टिनेंट गवर्नर ने यूनिवर्सिटी की सुधार पहलों की सराहना की और शैक्षणिक गुणवत्ता, छात्र कल्याण और संस्थागत शासन को मज़बूत करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने यूनिवर्सिटी को जून, 2026 के अंत से पहले ई–ऑफिस प्रणाली को लागू करने और हर छह महीने में यूनिवर्सिटी काउंसिल की मीटिंग आयोजित करने का निर्देश दिया।

लेफ्टिनेंट गवर्नर ने विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम में छात्रों की अधिक भागीदारी का आह्वान किया। उन्होंने नशा मुक्त भारत और नशा मुक्त जम्मू–कश्मीर अभियानों में छात्रों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के निर्देश भी जारी किए। प्रो. के. एस. चंद्रशेखर, कुलपति, क्लस्टर यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू, ने यूनिवर्सिटी के प्रशासनिक, शैक्षणिक, वित्तीय, परीक्षा और मूल्यांकन सुधारों, छात्र नामांकन स्थिति और अनुसंधान और शिक्षा में विभिन्न शैक्षणिक सहयोगों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी।

मीटिंग में कश्मीर यूनिवर्सिटी के कुलपति, प्रो. नीलोफर खान; क्लस्टर यूनिवर्सिटी श्रीनगर के कुलपति, प्रो. मोहम्मद मोबिन; अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, शांतमनु; लेफ्टिनेंट गवर्नर के प्रधान सचिव, डॉ. मनदीप के. भंडारी; प्रोवोस्ट, एसजीटी यूनिवर्सिटी, प्रो. मदन मोहन चतुर्वेदी; रजिस्ट्रार, क्लस्टर यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू, अंकुर महाजन, अन्य परिषद सदस्य और वरिष्ठ अधिकारी।

पाकिस्तान का कबूलनामा, ...

कई पाकिस्तानी सैनिक भी घायल हुए।

यह ऑपरेशन अप्रैल में जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का करारा जवाब था। उस हमले में 26 पर्यटकों की जान चली गई थी, जिसकी जिम्मेदारी पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट ने ली थी। भारत ने इसके जवाब में सीमा पार आतंकी ठिकानों और उन्हें शह देने वाले सैन्य अड्डों को निशाना बनाया।

भारतीय रक्षा बलों ने पहले ही खुलासा किया था कि श्ऑपरेशन सिंदूरश के तहत रावलपिंडी के नूर खान एयरबेस सहित कई रणनीतिक ठिकानों पर समन्वित हवाई हमले किए गए थे। भारत द्वारा निशाना बनाए गए प्रमुख एयरबेस में रावलपिंडी, रफीकी और मुरीद एयरबेस शामिल थे। स्कार्दू, जैकोबाबाद और सरगोधा के एयरबेस, जिन्हें इन हमलों में भारी नुकसान पहुंचने की खबर थी। पाकिस्तान की इस स्वीकारोक्ति ने भारत की सैन्य क्षमता और आतंकवाद के खिलाफ उसकी जीरो टॉलरेंस नीति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फिर से साबित कर दिया है।

राष्ट्रपति मुर्मू ने ...

है कि मुर्मू ने ष्छे वाघशीर के चालक दल के साथ बातचीत करते हुए उनके समर्पण, प्रतिबद्धता और निस्वार्थ सेवा की भावना की सराहना की।

सचिवालय ने सोशल मीडिया पर कहा, उन्होंने कहा कि यह स्वदेशी पनडुब्बी भारतीय नौसेना की पेशेवर उत्कृष्टता, युद्ध की तैयारी और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का एक शानदार उदाहरण है। पी75 स्कॉर्पीन परियोजना की छठी और अंतिम पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर को जनवरी में नौसेना में शामिल किया गया था। नौसेना अधिकारियों के अनुसार, यह दुनिया की सबसे शांत और बहुमुखी डीजल–इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों में से एक है।

इसे एंटी–सरफेस युद्ध, एंटी–सबमरीन युद्ध, खुफिया जानक. ारी जुटाने, क्षेत्र की निगरानी और विशेष अभियानों सहित कई तरह के मिशनों को अंजाम देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वायर–गाइडेड टॉरपीडो, एंटी–शिप मिसाइलों और उन्नत सोनार सिस्टम से लैस, इस पनडुब्बी में मॉड्यूलर निर्माण भी है, जो भविष्य में एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन तकनीक के एकीकरण जैसे अपग्रेड की अनुमति देता है। भारतीय नौसेना हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के दीर्घकालिक सुरक्षा हितों को ध्यान में रखते हुए कारवार बेस का विकास कर रही है। अक्टूबर में, मुर्मू ने अंबाला में भारतीय वायु सेना स्टेशन से राफेल फाइटर जेट में उड़ान भरी, और ऐसा करने वाली वह भारतीय वायु सेना (प्।थ्) के दो अलग–अलग फाइटर विमाना. में उड़ान भरने वाली भारत की पहली राष्ट्रपति बन गईं। इससे पहले, उन्होंने अप्रैल 2023 में असम के तेजपुर से सुखोई 30 एमकेआई में उड़ान भरी थी।

दिल्ली में 20 हजार ...

और उत्तर प्रदेश से आने वाली भीड़ को देखते हुए दिल्ली की सीमाओं पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। प्रवेश द्वारों पर हर वाहन की जांच की जाएगी।

पार्टी जोन पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम

कनॉट प्लेस, हौज खास और प्रमुख शॉपिंग मॉल्स के आसपास विशेष नाकेबंदी की गई है। रणनीतिक स्थानों पर त्वरित प्रतिक्रिया टीमें तैनात रहेंगी। ट्रैफिक पुलिस ने खतरनाक ड्राइविंग और स्टंटबाजी रोकने के लिए सख्त योजना बनाई है। शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों की पहचान के लिए पुलिस बड़े पैमाने पर ब्रेथ एनालाइजर का इस्तेमाल करेगी। अधिकारियों ने साफ किया है कि शराब पीकर वाहन चलाने या खतरनाक स्टंट करने पर वाहन को तुरंत जब्त कर लिया जाएगा। कनॉट प्लेस के श्इनर सर्कलश में केवल वैध स्टिकर वाले वाहनों को ही प्रवेश की अनुमति मिलेगी।

सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस होटल, गेस्ट हाउस और रैन बसेरों की लगातार चेकिंग कर रही है। बस स्टैंड और रेलवे स्टेशनों पर भी विशेष अभियान चलाया जा रहा है ताकि किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि की पहचान की जा सके। सभी थाना प्रभारियों को पूरी रात सड़कों पर रहने के निर्देश दिए गए हैं।

खाप पंचायत ने 18 से ...

स्वीकार करने पर सहमति जताई।

खाप नेताओं ने बताया कि पंचायत में लिए गए फैसलों को लागू कराने के लिए गांव–गांव जाकर ग्राम समाज के जिम्मेदार लोगों के साथ विचार–विमर्श किया जाएगा। इन निर्णयों को समाज के हित में पूरे उत्तर प्रदेश में लागू कराने के प्रयास किए जाएंगे और अन्य खापों से भी संपर्क कर इसे एक अभियान का रूप दिया जाएगा।

स्मार्टफोन के बढ़ते उपयोग पर चिंता जताते हुए खाप चौधरियों ने कहा कि बहुत कम बच्चे मोबाइल का सही इस्तेमाल पढ़ाई के लिए करते हैं, जबकि ज्यादातर समय बच्चे मोबाइल में व्यस्त रहते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है और वे बड़ों की बात मानने से भी इनकार करने लगे हैं। उन्होंने कहा कि घर के भीतर पहनावे पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर मर्यादित और साधारण कपड़े पहनना सामाजिक दृष्टि से आवश्यक है। इस मामले पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चौधरी यशपाल सिंह ने भी पंचायत के फैसलों का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि खाप पंचायतें समाज की जमीनी हकीकत को समझते हुए फैसले लेती हैं और उनका उद्देश्य युवाओं को सही दिशा देना है।

यशपाल सिंह ने कहा कि आज के दौर में बच्चों और युवाओं में अनुशासन और सामाजिक संस्कारों की आवश्यकता पहले से अधिक है। बागपत से लोकसभा सांसद राजकुमार सांगवान ने कहा कि खाप चौधरियों की यह चिंता उचित है। सामाजि. कता और संस्कृति बनी रहनी चाहिए, इससे देश और समाज मजबूत होता है। सांगवान ने कहा कि युवाओं को संस्कार और संस्कृति से जोड़ने के लिए खाप चौधरी निरंतर काम करते हैं इसलिए उनकी बातों को सम्मान दिया जाना चाहिए।

सिक्किम में यूपी के ...

और कानूनी औपचारिकताओं के बाद शनिवार को शव परि. जनों को सौंप दिया गया। तिवारी के परिवार में उसकी पत्नी, एक बेटा और एक बेटी हैं। यह वर्ष 2025 में गोएचाला मार्ग पर मौत की तीसरी घटना है। युकसोम के पर्यटन से जुड़े हितधारकों ने प्रशासन से विशेष रूप से जोंगरी–गोएचाला कॉरिडोर में चिकित्सा सुविधाओं और आपातकालीन बचाव व्यवस्था को मजबूत करने की मांग की है।

एनआईए की एंटी-टेरर ...

गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री, अमित शाह ने किया।

मीटिंग को संबोधित करते हुए, गृह मंत्री ने राज्यों को भारत की काउंटर–टेररिज्म क्षमताओं को मज़बूत करने के लिए एक जैसा एंटी–टेरर स्क्वाड स्ट्रक्चर तेज़ी से लागू करने का निर्देश दिया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि पूरे देश में मज़बूत, एक जैसी और लगातार ऑपरेशनल कैपेसिटी के बिना, हम इंटेलिजेंस का सही इस्तेमाल और असरदार कोऑर्डिनेटेड काउंटर–एक्शन पक्का नहीं कर सकते।

होम मिनिस्टर ने पहलगाम और दिल्ली लाल किला ब्लास्ट के हाल के दो टेरर अटैक मामलों में अलग–अलग एजेंसियों और राज्य पुलिस फोर्स की ऑपरेशनल और इन्वेस्टिगेटिव सफलता की तारीफ़ की। उन्होंने कहा कि इन एजेंसियों ने पहलगाम टारगेटेड अटैक मामले में अपनी पूरी कार्रवाई से देश को गर्व महसूस कराया है। इस खतरनाक हमले में शामिल तीन टेररिस्ट को सफलतापूर्वक ट्रैक करने और खत्म करने का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा, "यह पहली टेररिस्ट घटना है जिसमें हमने ऑपरेशन सिंदूर के ज़रिए टेररिस्ट एक्ट की प्लानिंग करने वालों को सज़ा दी, और ऑपरेशन महादेव के ज़रिए हमला करने वाले टेररिस्ट को न्यूट्रलाइज़ किया गया।" उन्होंने इन दोनों एक्शन को "पाकिस्तान में बैठे टेररिस्ट मास्टरमाइंड्स को भारत सरकार, भारत के सिक्योरिटी फोर्स और भारत के लोगों की तरफ़ से एक मज़बूत और निर्णायक जवाब" बताया।

लगातार बदलती टेक्नोलॉजी और टेरर लैंडस्केप की ओर इशारा करते हुए, मिनिस्टर ने लगातार उनकी जाँच करने और उन्हें फिर से जाँचने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। मंत्री ने केंद्र और राज्यों की सभी एजेंसियों को साइबर वॉरफेयर, हाइब्रिड वॉरफेयर अलर्टनेस, मल्टी सिक्योरिटी लेयरिंग और इंटेलिजेंस के फ्री फ्लो जैसे इंटरनेशनल मामलों पर ध्यान देने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। अपनी जांच और प्रॉसिक्यूशन क्षमताओं को मज़बूत करने के महत्व पर ज़ोर देते हुए, मंत्री ने राज्यों से अपने सुरक्षा और पुलिस कर्मियों के लिए रेगुलर ट्रेनिंग आयोजित करने को कहा।

इस मौके पर, गृह मंत्री ने उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी जिन्हें उनके शानदार प्रदर्शन के लिए सर्विस मेडल से सम्मानित किया गया। उन्होंने देश भर के 36,000 से ज़्यादा ब्।च्थ् कर्मियों और पुलिस कर्मियों को भी दिल से श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने अपनी ड्यूटी निभाते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

जम्मू में जेक ...

को टी–शर्ट, फिनिशिंग मेडल और रिफ्रेशमेंट दिए गए।

सिन्हा ने कहा कि जम्मू और कश्मीर पुलिस अपने नागरिक कार्रवाई कार्यक्रम के तहत सर्दियों की राजधानी में लगातार खेल और समुदाय–उन्मुख कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है, जिन्हें खासकर युवाओं से ज़बरदस्त प्रतिक्रिया मिली है। उन्होंने कहा, "इन पहलों का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ, सकारात्मक और अनुशासित जीवन शैली को बढ़ावा देते हुए खेल प्रतिभाओं की पहचान करना और उन्हें निखारना है।"

बीएसएफ ने नकारा ...

है। उन्होंने कहा, हालुआघाट क्षेत्र से किसी के भी मेघालय में दाखिल होने की कोई खबर नहीं है। न तो हमारे जवाना. ने ऐसी कोई हलचल देखी है और न ही हमें कोई ऐसी रिपोर्ट मिली है।

मेघालय पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी पुष्टि की है कि गारो हिल्स क्षेत्र में किसी भी संदिग्ध की मौजूदगी की कोई खुफिया जानकारी नहीं मिली है। राज्य पुलिस और केंद्रीय एजेंसियां मिलकर काम कर रही हैं, लेकिन अब तक कोई संदिग्ध गतिविधि सामने नहीं आई है। दरअसल, ढाका पुलिस के एक अधिकारी ने दावा किया था कि उस्मान हादी की हत्या के दो मुख्य आरोपी, फैसल करीम मसूद और आलमगीर शेख, अवैध तरीके से मेघालय में छिप गए हैं।

बांग्लादेश में चल रही अस्थिरता को देखते हुए भारत–बांग्लादेश सीमा पर बीएसएफ के जवान पहले से ही हाई अलर्ट पर हैं। अधिकारियों का कहना है कि सीमा पर निगरानी बेहद सख्त है और अवैध घुसपैठ की किसी भी को. शिश को तुरंत नाकाम कर दिया जाएगा।

एनडीपीएस मामलों में ...

कर लिया है।

वार्ड नंबर 17, शंकर नगर, उधमपुर निवासी शक्ति सिंह पुत्र तरलोक सिंह की लगभग 1.30 करोड़ की अचल संपत्ति को पुलिस स्टेशन रेंबल की एफआईआर संख्या 72/2025 धारा 8/21/22 एनडीपीएस अधिनियम के संबंध में अटैच कर दिया गया है। संलग्न संपत्ति में उधमपुर जिले के शंकर नगर में स्थित खसरा नंबर 491/593 के अंतर्गत आने वाली 01 कनाल भूमि के साथ पक्का आवासीय घर शामिल है।

वहीं एक अन्य मामले में कौशल शर्मा उर्फ बिरू, पुत्र काका राम, निवासी कैंबल डंगा, उधमपुर की लगभग 70 लाख रुपये की अचल और चल संपत्तियां पुलिस स्टेशन रेंबल की एफआईआर संख्या 113/2025 अंडर सेकशन 8/21/22 एनडीपीएस अधिनियम के तहत जब्त कर ली गई हैं।

संलग्न संपत्तियों में उधमपुर जिले के कैंबल डंगा में स्थित खसरा क्रमांक 618 के अंतर्गत आने वाला 1 कनाल भूमि सहित पक्का आवासीय मकान और पंजीकरण क्रमांक (जे. के,14,जी–7724) वाली महिंद्रा बोलेरो गाड़ी शामिल हैं।

जांच के दौरान, विस्तृत वित्तीय विश्लेषण और पूर्वव्यापी संबंध विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि उपर्युक्त संपत्तियां अवैध मादक पदार्थों की तस्करी से प्राप्त धन से अधिग्रहित की गई थीं। इन निष्कर्षों के आधार परए, सक्षम प्राधिकारी ने अटैच के आद. ेश पारित किए और एनडीपीएस अधिनियम के तहत आगे की कार्यवाही जारी है। उधमपुर पुलिस द्वारा इस वर्ष एनडीपीएस की संपत्ति अटैच करने का कुल आंकड़ा 21.5 करोड़ तक पहुंच गया है, जो मादक पदार्थों के तस्करों के खिलाफ पुलिस के निरंतर अभियान को दर्शाता है।

आरक्षण विवादः मार्च...

ही अंदर से किसी को बाहर जाने दिया जा रहा है, कि उन्हें घर में नज़रबंद किया गया है।

छात्रों ने कहा कि उनकी मांग आरक्षण ढांचे में असंतुलन पर केंद्रित है, जिसके बारे में उनका मानना घ्है कि यह ओपन मेरिट कैटेगरी के उम्मीदवारों पर बुरा असर डालता है। छात्रों के अनुसार, सरकार ने उन्हें बताया है कि यह मामला फिलहाल लेफ्टिनेंट गवर्नर के कार्यालय में है। उन्होंने इस मुद्दे को सुलझाने में हो रही अनुचित देरी पर निराशा व्यक्त की, और कहा कि इस अनिश्चितता ने उनके शैक्षणिक और करियर की संभावनाओं पर असर डाला है।

डीआईजी आरपी रेंज ...

बेसिक पुलिसिंग को असरदार तरीके से लागू करके इंटेलिजेंस ग्रिड को फिर से बेहतर बनाने पर विस्तार से चर्चा हुई। समय पर इनपुट और प्रोएक्टिव पुलिसिंग पक्का करने के लिए ज़मीनी स्तर पर इंटेलिजेंस तैयार करने को मज़बूत करने पर ज़ोर दिया गया।

डीआईजी आरपी रेंज ने बीट सिस्टम को असरदार तरीके से लागू करने के लिए साफ निर्देश जारी किए, जिसमें टेरर इकोसिस्टम, नार्को–सपोर्ट स्ट्रक्चर, फरार लोगों और बदनाम लोगों की पहचान और लगातार निगरानी पर खास ध्यान दिया गया। अधिकारियों को यूनिट लेवल पर रेगुलर बीट चेक, कम्युनिटी से बातचीत और इंटेलिजेंस इनपुट का डॉक्यूमेंटेशन पक्का करने का निर्देश दिया गया।

मीटिंग में मौजूद अधिकारियों ने अपने फील्ड इंटेलिजेंस नेटवर्क, मौजूदा सुरक्षा इंतज़ामों और पुलिस स्टेशनों, पुलिस चौकियों और एसओजी कैंपों के लेवल पर शांति बनाए रखने और देश विरोधी और क्रिमिनल गतिविधियों को रोकने के लिए किए जा रहे कामों की पूरी जानकारी दी।

नार्को–स्मगलिंग और टेरर नेटवर्क के खिलाफ कोशिशों का रिव्यू करते हुए डीआईजी आरपी रेंज ने अधिकारियों से ह्यूमन इंटेलिजेंस नेटवर्क को मजबूत करने के अलावा, नई इंटेलिजेंस कलेक्शन और एनालिसिस तकनीकों के ज़रिए ऑपरेशन को और बढ़ाने का आग्रह किया।

जिले में क्राइम की स्थिति का डिटेल में रिव्यू किया गया। सभी अधिकारियों पर यह ज़ोर दिया गया कि वे तय जांच टाइमलाइन का सख्ती से पालन करें। डीआईजी ने साइंटिफिक और टेक्नोलॉजी से चलने वाले इन्वेस्टिगेशन टूल्स के इस्तेमाल, फोरेंसिक मोबाइल यूनिट्स के असरदार इस्तेमाल और सीन ऑफ़ क्राइम डॉक्यूमेंटेशन बनाने पर ज़ोर दिया, ताकि फेयर, ट्रांसपेरेंट और प्रोफेशनल इन्वेस्टिगेशन पक्की हो सके।

मीटिंग में एसएसपी पुंछ शफ़कत हुसैन, सभी गैजेटेड ऑफिसर्स और ज़िला पुंछ के पुलिस थानों के टेरिटोरियल एसएचओ शामिल हुए। रिव्यू इस निर्देश के साथ खत्म हुआ कि ज़िले में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए अलर्टनेस, प्रोफेशनलिज़्म और पब्लिक–सेंट्रिक पुलिसिंग के हाई स्टैंडर्ड बनाए रखें।

HELPLINE

POLICE STATIONS	
Bagh-e-Bahu	2459777
Bakshi Nagar	2580102
Bus Stand	2575151
City	2543688
Gandhi Nagar	2430528
Gangyal	2482019
Nowbad	2571332
Pacca Danga	2548610
Railway Station	2472870
Sainik Colony	2462212
Satwari	2430364
Channi Himmat	2465164
Transport Nagar	2475444
Trikuta Nagar	2475133
Gandhi Nagar	2459660
SSP City	2561578
SP City North	2547038
SP South	2433778
Public Utility Services	
INDIAN AIR LINES	
City Office	2542735
Air Port	2430449
Jet Air Ways	2453999
City Office	2573399
RAILWAYS	
Railway Enquiry	131, 132, 2476407
Booking	2470318
Reservation	2470315
Public Health Engineering Stations	
Bakshi Nagar	2543557
Gandhi Nagar	2430786
Company Bagh	2542582
New Plot	2573429
Panjtirthi	2547537
Telecommunication Department	
Directory Enquiry	197
Fault Repair	198
Trunk Booking	180
Billing Complaint	2543896
JAMMU MUNICIPALITY	
Jn. Lines	2578503
Administration Officer	2542192
Health Officer	2547440
POSTAL SERVICES	
Head Post Office City	2543606
Gandhi Nagar	2435863
FIRE SERVICES	
Control Room	101, 132, 2476407
City	2544263
Gandhi Nagar	2457705
Canal	2554064
Gangyal	2480026
COOKING GAS DEALERS	
Chenab Gas	2547633
Gulmour Gas	2430835
JAKFED	2548297
HP Gas	2578456
Shivangi Gas	2577020
Tawi Gas	2548455
POWER HOUSES	
Gandhi Nagar	2430180
Canal Road	2554147
Janipur	2533828
Nanak Nagar	2430776
Parade	2542289
Satwari Cantt.	2452813
HOSPITALS	
GMC Hospital	2584290
S.M.G.S. Hospital	2547635
C.D. Hospital	2577064
Dental Hospital	2544670
Gandhi Nagar Hospital	2430041
Sarwal Hospital	2579402
G.B. Pant Cantt. Hospital	2433500
Ayurvedic College	2543661
C.R.P. Hospital	2591105
Acharya Shri Chander	2662536
Mental Hospital	2577444
Swami Vivekanand	2547418
Blood Bank	2547637
Ambulances	2584225, 2575364
Ambulances (Red Cross)	2543739
NURSING HOMES	
Maddan Hospital	2456727
Medicare	2435070
Triveni Nursing Home	2452664
Suvidha Nursing Home	2555965
Al. Firdous Nursing Home	2545050
Astha Nursing Home	2576707
Bee Enn Charitable Trust	2505310
Chopra Nursing Home	2573580
Harbans Singh Mem Hsp.	2541952
Jeevan Jyoti	2576985
Yudhvir Nursing Home	2547821
Mediaid Nursing Home	2466744
Sita Nursing Home	2435007
Vibhuti Nursing Home	2547969
Rameshwar Nursing Home	2580601
Bee Enn Cheritable	2555631
Maharishi Dayanand	2545225

Created by Universal Document Converter

आगरा में भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी का भव्य स्वागत, सीगना सभा में वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह रहे प्रमुख रूप से उपस्थित

आगरा, संजय सिंह। उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष माननीय पंकज चौधरी के आगरा आगमन पर पार्टी कार्यकर्ताओं एवं नेताओं में उत्साह का माहौल देखने को मिला। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने सीगना स्थित आयोजित सभा में उनका गर्म जोशी से स्वागत किया। सभा के दौरान वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह, जिला अध्यक्ष प्रशांत पोनिया, क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य आदि मंच पर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक मौजूद रहे, जिन्होंने प्रदेश अध्यक्ष के आगमन का स्वागत किया। माननीय पंकज चौधरी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संगठन की मजबूती, जनसेवा और आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाजपा की नीतियों और कार्यकर्ताओं की मेहनत से प्रदेश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। हजारों लोगों की उपस्थिति में सभा सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई, जिसमें संगठनात्मक एकता और जनकल्याण के संकल्प को दोहराया गया।

एनएटीएफ चेयरमैन विशाल चोपड़ा ने बीडीए सीईओ से मुलाकात की, भद्रवाह में नए टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनाने पर ज़ोर दिया

भद्रवाह, 27 दिसंबर: नेशनल एंटी टेररिज्म फ्रंट (एनएटीएफ) के चेयरमैन विशाल चोपड़ा ने आज

भद्रवाह डेवलपमेंट अथॉरिटी (बीडीए) के सीईओ संजीव शर्मा से मुलाकात की और इलाके में टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर को मज़बूत करने के उपायों पर चर्चा की।

इस मीटिंग में कई स्थानीय सरपंच भी मौजूद थे, जो एनएटीएफ के सदस्य भी हैं३

बातचीत के दौरान, सरपंचों ने भद्रवाह शहर और उसके आसपास चार से पांच नए टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनाने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि इस पहल से इलाके के बाहर से टूरिस्ट आएंगे, रोज़गार के मौके पैदा होंगे, स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलेगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था काफी मज़बूत होगी।

सकारात्मक जवाब देते हुए, बीडीए के सीईओ संजीव शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल को भरोसा दिलाया कि प्रस्तावों की जांच की जाएगी और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर लिया जाएगा। उन्होंने भद्रवाह के प्लान्ड डेवलपमेंट और ओवरऑल प्रगति के प्रति अथॉरिटी की प्रतिबद्धता को दोहराया।

इस आश्वासन का स्थानीय प्रतिनिधियों और निवासियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया, जिन्होंने ठक। नेतृत्व के सक्रिय और विकास-उन्मुख दृष्टिकोण पर संतोष व्यक्त किया।

217 करोड़ देने को तैयार, महाठग सुकेश अदिति सिंह को कोर्ट में सेटलमेंट ऑफर दिया

जेल में बंद आरोपी सुकेश चंद्रशेखर ने पटियाला हाउस कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रशांत शर्मा के समक्ष एक आवेदन दायर कर शिकायतकर्ता अदिति सिंह को 200 करोड़ रुपये की जबरन वसूली के मामले में 217 करोड़ रुपये देने की पेशकश की है। यह आवेदन उनके वकील अनंत मलिक के माध्यम से दायर किया गया है और इसमें स्पष्ट किया गया है कि यह पेशकश चंद्रशेखर के अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना की गई है और इसे अपराध स्वीकार करना नहीं माना जाएगा। मामले की सुनवाई 3 जनवरी, 2026 को होनी है। आवेदन में पक्षों को नई दिल्ली के लोधी कॉलोनी स्थित विशेष प्रकोष्ठ द्वारा दर्ज की गई एफआईआर के आधार पर समझौता करने की अनुमति मांगी गई है। न्यायिक हिरासत में रह रहे चंद्रशेखर ने अदालत से शिकायतकर्ता को नोटिस जारी करने और यह दर्ज करने का आग्रह किया है कि समझौता प्रस्ताव वास्तविक है और उनकी सहमति के अधीन है। दिल्ली पुलिस ने चंद्रशेखर पर रैनबैक्सी के पूर्व प्रमोटर शिविंदर सिंह और मालविंदर सिंह की पत्नियों से 200 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करने का मामला दर्ज किया है। उनके खिलाफ देशभर में कई अलग-अलग जांचें चल रही है।

दिल्ली पुलिस ने इस जबरन वसूली मामले में चंद्रशेखर और उनके सहयोगी ए. पॉलोस को गिरफ्तार किया है। उन पर मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम के तहत भी कार्यवाही चल रही है और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा उनकी जांच की जा रही है। पुलिस ने इस मामले में महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (एमसीओसीए) भी लगाया है। दिल्ली पुलिस के अनुसार, चंद्रशेखर, पॉलोस और अन्य आरोपियों ने कथित तौर पर हवाला चैनलों और फर्जी कंपनियों के नेटवर्क का इस्तेमाल अपराध की रकम को छिपाने और छुपाने के लिए किया। अदालत को अभी समझौता आवेदन पर आदेश देना बाकी है।

मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया पूरी हुई, कट सकते हैं 2.89 करोड़ नाम

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची की गहन विशेष संशोधन प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अंतिम आंकड़े और मतदाता सूची का मसौदा 31 दिसंबर को जारी किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार, राज्य में लगभग 2.89 करोड़ मतदाताओं को अपुनर्प्राप्त श्रेणी में रखा गया है, जिसका अर्थ है कि उनके नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं। इससे पहले, उत्तर प्रदेश में कुल लगभग 15.44 लाख पंजीकृत मतदाता थे। विशेष मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया की अंतिम तिथि के बाद, लगभग 2.89 करोड़ मतदाताओं, यानी कुल मतदाताओं के लगभग 18.7 प्रतिशत, के नाम शामिल नहीं किए जा सके। अकेले राज्य की राजधानी लखनऊ में ही मतदाताओं की संख्या में लगभग 12 लाख की कमी आई है। जिन मतदाताओं के नाम कट सकते हैं, वे अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत व डुप्लीकेट श्रेणी में शामिल है। अब 31 दिसंबर को मतदाता सूची का ड्राफ्ट प्रकाशन होगा। जिन जिलों में सबसे ज्यादा नाम कट रहे हैं उनमें लखनऊ, गाजियाबाद, प्रयागराज, कानपुर, आगरा व बरेली के सबसे ज्यादा है।

मतदाता सूची में दर्ज 1.11 करोड़

मतदाताओं के रेकॉर्ड नहीं मिल रहे हैं। वर्ष 2003 की मतदाता सूची में न तो इनके और न ही इनके माता-पिता या बाबा-दादी के नाम मिले है। यह कुल मतदाताओं का करीब 7 प्रतिशत है। ड्राफ्ट मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद इन्हें निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (म्त्व) नोटिस देंगे। इन्हें भारत निर्वाचन आयोग की ओर से अनुमन्य 12 प्रमाण पत्रों में से एक देना होगा। आधार कार्ड अकेले मान्य नहीं होगा। इसके साथ कोई दूसरा प्रमाण पत्र भी लगाना होगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के मुताबिक गणना प्रपत्र जमा करने की आखिरी तारीख सूची का प्रकाशन होगा। इसके बाद 31 दिसंबर से 30 जनवरी तक दावे व आपत्तियां ली जाएंगी। 31 दिसंबर से 21 फरवरी तक उन मतदाताओं को नोटिस दिए जाएंगे जिनके रेकॉर्ड नहीं मिल पाए हैं। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 28 फरवरी को होगा।

मतदाता सूची में नाम नही, तो फॉर्म-6 भर सकते है

जिनका नाम वर्ष 2025 की मतदाता सूची में नहीं है, वे फॉर्म-6 भरकर मतदाता बन सकते है। जिनके पास गणना प्रपत्र आया था लेकिन वह किन्हीं कारणों से भर नहीं सके तो वे भी फॉर्म-6 भरकर मतदाता बन सकते है। हालांकि उन्हें एक शपथ पत्र भरना होगा। इसमें गणना प्रपत्र की तरह ही 2003 का रेकॉर्ड देना होगा। एक जनवरी 2026 को 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले युवा भी फॉर्म-6 भरकर मतदाता बन सकते हैं।

गुजरात: नेपाल के राजदूत शंकर प्रसाद शर्मा ने मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल से की मुलाकात, विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। नेपाल के पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गुजरात दौरे पर आए नेपाल के राजदूत शंकर प्रसाद शर्मा ने गांधीनगर में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार मुलाकात की। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई है। गुजरात मुख्यमंत्री कार्यालय के अनुसार, राजदूत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में गुजरात में विकसित विश्व स्तरीय पर्यटन स्थलों की सराहना की। उन्होंने मुख्यमंत्री से पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, जल ऊर्जा, विनिर्माण और शिक्षा क्षेत्रों में सहयोग पर विस्तृत चर्चा की।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में गुजरात एक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरा है और सेमीकंडक्टर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्विक क्षमता केंद्रों जैसे उभरते क्षेत्रों में अग्रणी बनने के लिए भी पूरी तरह तैयार है। उन्होंने आगे बताया कि स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, श्वेत रेगिस्तान और सोमनाथ, द्वारका और अंबाजी जैसे आध्यात्मिक

पर्यटन स्थलों के साथ गुजरात दुनिया भर के पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बन गया है।

इस बैठक में मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव संजीव कुमार, उद्योग विभाग की प्रधान सचिव ममता वर्मा, उद्योग आयुक्त पी. घ्स्वरूप और नेपाल प्रतिनिधिमंडल के सदस्य उपस्थित थे। इस बीच, शुक्रवार को नेपाल के राजदूत शंकर प्रसाद शर्मा ने अपने पूरे दल के साथ उत्तराखंड के धारचूला क्षेत्र में भारत-नेपाल सीमा पर बन रहे अंतरराष्ट्रीय मोटर पुल का निरीक्षण किया। एएनआई से बात करते हुए राजदूत शंकर प्रसाद शर्मा ने बताया कि पुल लगभग बनकर तैयार है, जबकि इससे जुड़ने वाली सड़क का निर्माण कार्य जारी है और यह दिसंबर के अंत तक पूरा हो जाएगा।

निकाय चुनाव में एनसीपी की एकता पर प्रश्नचिन्ह: अजीत-शरद पवार के बीच 'घड़ी' बनाम 'तुरही' का पेंच

नई दिल्ली। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के दोनों गुट पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ नगर निगम चुनावों में गठबंधन करने में विफल रहे हैं। अजीत पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी और एनसीपी-एसपी दोनों ही स्थानीय निकाय चुनाव मिलकर लड़ने के इच्छुक थे और पिछले कुछ दिनों में दोनों गुटों के वरिष्ठ नेताओं ने कई बैठकें की थीं। हालांकि, एनसीपी ने एक शर्त रखी थी कि एनसीपी-एसपी के सभी उम्मीदवार उसके 'घड़ी' चिन्ह पर चुनाव लड़ें, जो शरद पवार गुट को स्वीकार्य नहीं था। सूत्रों के अनुसार, एनसीपी-एसपी ने अजीत पवार गुट को बताया कि उसके उम्मीदवार केवल उसके 'तुरही' चिन्ह पर ही चुनाव लड़ेंगे।

हालांकि दोनों गुटों के बीच सहमति नहीं बन पाई है, सूत्रों का मानना घ्है कि उनके बीच

बातचीत जारी रहेगी। गौरतलब है कि महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और एनसीपी प्रमुख अजीत पवार ने शुक्रवार रात पिंपरी-चिंचवाड़ में एनसीपी-एसपी नेता आज़म पानसरे से मुलाकात कर गठबंधन की संभावना पर चर्चा की थी। पानसरे ने कहा कि अजीत पवार लंबे समय बाद मुझसे मिलने आए। हमने कई मुद्दों पर चर्चा की। हम (एनसीपी, एसपी और एनसीपी के बीच) गठबंधन करना चाहते हैं... उन्होंने मुझे बताया कि जल्द ही कोई फैसला लिया जाएगा।

2024 के लोकसभा चुनावों से पहले, अजीत पवार और कई अन्य नेताओं के राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल होने के बाद एनसीपी में फूट पड़ गई थी। बाद में, भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) ने अजीत पवार के गुट को असली एनसीपी घोषित किया और उसे मूल 'घड़ी' का चुनाव चिन्ह दिया। हालांकि, पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ नगर निगम चुनावों के लिए दोनों पार्टियां एक बार फिर से गठबंधन करने पर विचार कर रही हैं। एनसीपी के इस संभावित गठबंधन को देखते हुए, कांग्रेस ने कहा है कि वह महाराष्ट्र में हाल के घटनाक्रमों पर नजर रख रही है और शरद पवार के फैसले का स्वागत करेगी। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना-यूबीटी ने भी इसी तरह का बयान दिया है।

दिल्ली में नव वर्ष से पहले पुलिस का 'ऑपरेशन आघट': 285 से ज़्यादा गिरफ्तार, हथियार-ड्रग्स जब्त

नई दिल्ली। दिल्ली में नए साल के जश्न की तैयारियों के बीच, पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी में रात भर चले व्यापक अभियान में सैकड़ों आरोपियों को गिरफ्तार किया, अवैध हथियार जब्त किए और चोरी की संपत्ति बरामद की। यह अभियान त्योहारी भीड़भाड़ के दौरान अपराध को रोकने के उद्देश्य से चलाया गया था। दक्षिण पूर्वी दिल्ली पुलिस द्वारा चलाए गए इस गहन अभियान, 'ऑपरेशन आघट 3.0' के तहत, जिले के संवेदनशील इलाकों में समन्वित छापेमारी और जांच की गई। इसका लक्ष्य संगठित अपराध, गली-मोहल्ले के अपराधियों और बार-बार कानून तोड़ने वालों को पकड़ना था।

पुलिस ने बताया कि इस अभियान के दौरान शस्त्र अधिनियम, उत्पाद शुल्क अधिनियम, एनडीपीएस अधिनियम और जुआ अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत 285 आरोपियों को गिरफ्तार किया

गया। इसके अतिरिक्त, नव वर्ष समारोहों के दौरान संभावित अपराधों को रोकने के लिए निवारक कार्रवाई के तहत 504 लोगों को हिरासत में लिया गया। आदतन अपराधियों के खिलाफ लक्षित कार्रवाई के तहत, 116 सूचीबद्ध बुरे चरित्र वाले लोगों को पकड़ा गया, जबकि पुलिस ने छापेमारी के दौरान 10 संपत्ति अपराधियों और पांच वाहन चोरों को भी गिरफ्तार किया।

इस अभियान के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण बरामदगी हुई, जिसमें 21 देसी पिस्तौलें, 20 जिंदा कारतूस और 27 चाकू शामिल हैं। पुलिस टीमों ने मादक पदार्थों और अवैध शराब की खेप भी जब्त की, जो उत्सवों से पहले बाजार में प्रतिबंधित सामान पहुंचाने के प्रयासों का संकेत देती है। चोरी की गई संपत्ति की बड़े पैमाने पर बरामदगी भी की गई। पुलिस ने बताया कि अभियान के दौरान छीने गए, लूटे गए या गुम हुए 310 मोबाइल फोन बरामद किए गए।

वाहन चोरी के गिरोहों को करारा झटका देते हुए, पुलिस ने जिले भर में तलाशी और सड़क जांच के दौरान 231 दोपहिया वाहन और एक चार पहिया वाहन जब्त या बरामद किए। कुल मिलाकर, पुलिस ने रात भर गश्त लगाकर स्थानीय खुफिया जानकारी के आधार पर जांच, सत्यापन और लक्षित छापेमारी की, जिसके तहत एहतियाती उपायों के तहत 1,306 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

अखलाक केस क्यों बंद करना चाहती थी योगी सरकार? कोर्ट ने पलट दिया पूरा मामला

नई दिल्ली। ग्रेटर नोएडा के अखलाक लिंचिंग केस में उत्तर प्रदेश सरकार को एक बड़ा कानूनी झटका लगा है। सूरजपुर की जिला अदालत ने लिंचिंग आरोपियों के खिलाफ मुकदमा वापस लेने से जुड़ी योगी सरकार की याचिका को खारिज कर दिया है। जो याचिका मुकदमा वापस लेने के लिए जारी की दायर की गई थी। उसे अदालत ने साफ कर दिया है कि यह मामला बंद नहीं होगा और आरोपियों के खिलाफ ट्रायल जारी रहेगा। यूपी सरकार की ओर से दाखिल की गई केस वापसी की अर्जी पर अदालत ने सुनवाई के बाद तीखी टिप्पणी की। कोर्ट ने अभियोजन पक्ष यानी प्रोसीक्यूशन जो पक्ष है उसको उसकी दलीलों को आधारहीन और महत्वहीन यानी बेसलेस एंड इर्रेलेवेंट बताया। कहा कि केस वापस लेने के लिए कोई ठोस कानूनी वजह सामने नहीं रखी गई। इस फैसले के साथ ही यह साफ हो गया है कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की वो कोशिश जिसके जरिए अखलाक लिंचिंग के आरोपियों को राहत दिलाने की बात कही जा रही थी अब कानूनी तौर पर आगे नहीं बढ़ पाएगी। यह याचिका यूपी सरकार ने अक्टूबर 2025 में ट्रायल कोर्ट में दाखिल की थी। यह फैसला कानूनी और लोकतांत्रिक नजरिये, दोनों ही तरह से महत्वपूर्ण है। यह निर्णय बताता है कि न्याय व्यवस्था भावनाओं के हिसाब से नहीं चलती।

10 साल पुरानी घटना

सितंबर 2015 में ग्रेटर नोएडा के बिसाहड़ा में भीड़ ने अखलाक की इस शक में पीट-पीटकर हत्या कर दी थी कि उसके घर में गोमांस है। मॉब लिंचिंग की इस वारदात ने तब पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। इस मामले में 18 अभियुक्तों पर अभी केस चल रहा है और फिलहाल सभी जमानत पर हैं। इस साल अक्टूबर में अचानक से यूपी सरकार ने केस वापस लेने का फैसला ले लिया।

सरकार का तर्क

यूपी सरकार ने हवाला देते हुए सभी आरोपियों के खिलाफ मामला वापस लेने और नियोजनको संयुक्त निदेशक के अनुमति मांगने के लिए अदालत में याचिका निर्देशों के बाद सहायक जिला सरकारी अधिवक्ता (आपराधिक) द्वारा यह आवेदन दायर किया गया था। कोर्ट के इस फैसले से स्पष्ट हो गया है कि अखलाक हत्याकांड में शामिल सभी आरोपियों के खिलाफ मुकदमा आगे बढ़ेगा और मामले की नियमित सुनवाई होगी।

मॉब लिंचिंग में बेटा भी हुआ जख्मी, 19 पर था दर्ज हुआ था केस

28 सितंबर 2015 की रात प्रतिबंधित मांस को लेकर अफवाह फैली और भीड़ ने अखलाक की पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। पूरे देश में आक्रोश फैल गया था। अखलाक के बेटे दानिश (22) को भी गंभीर चोट लगी थी। पुलिस ने जांच के बाद कुल 19 लोगों को आरोपी बनाया था। सभी पर हत्या, दंगा भड़काने और जान से मारने की धमकी देने जैसी गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया गया था।

अखलाक के अधिवक्ता बोले-दर्ज होंगे बयान

अखलाक पक्ष के अधिवक्ता यूसुफ सैफी ने बताया कि अदालत ने अभियोजन पक्ष की ओर से लगाई गई याचिका को निरस्त कर दिया है। अभियोजन को आगे गवाहों के बयान दर्ज कराने को कहा गया है। अदालत ने पुलिस आयुक्त और डीसीपी को निर्देशित किया कि अगर जरूरत हो तो गवाहों को सुरक्षा दी जाए। इससे पहले इस केस में 12 और 18 दिसंबर को भी सुनवाई हो चुकी थी, लेकिन अभियोजन पक्ष के समय मांगने के कारण फैसला नहीं हो पाया था। सुनवाई के दौरान सीपीएम नेता नेता वृंदा करात भी कोर्ट पहुंची और कहा कि यह न्याय की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस फैसले से देश में महत्वपूर्ण संदेश जाएगा। यूपी सरकार ने न्याय की प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश की थी। इससे पहले बिलकिस बानो केस में भी ऐसा करने का प्रयास किया गया था।

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय

बिगड़ते रिश्ते

भारत और बांग्लादेश के बीच संबंध दशकों में अपने सबसे नाजुक दौर में प्रवेश कर रहे हैं, इसका कारण कोई एक राजनयिक विवाद नहीं, बल्कि सड़क पर हिंसा, राजनीतिक अनिश्चितता और सीमा के दोनों ओर कठोर होती बयानबाज़ी का खतरनाक मेल है। जो हो रहा है, वह नीति में खराबी से ज़्यादा भरोसे का टूटना है। तात्कालिक वजह बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शनों के दौरान हुई एक क्रूर हत्या है, एक ऐसा काम जिसने भारत में गहरी प्रतिक्रिया पैदा की है क्योंकि यह अल्पसंख्यकों की सुरक्षा से जुड़ी संवेदनशील चिंताओं को छूता है। फिर भी, सिर्फ़ उस भयावह घटना पर ध्यान केंद्रित करने से बड़ी तस्वीर छूटने का खतरा है।

शेख हसीना के पतन के बाद बांग्लादेश एक बड़े राजनीतिक बदलाव के दौर से गुज़र रहा है, और बदलाव से खालीपन पैदा होता है। इस खालीपन में कट्टरपंथी समूह, अवसरवादी लोग और बेलगाम सड़क की राजनीति आ गई है जो शासन के बजाय शिकायतों पर पनपती है। भारत के लिए, स्वाभाविक प्रतिक्रिया नैतिक आक्रोश के साथ राजनीतिक लामबंदी रही है। यह समझा जा सकता है। कोई भी लोकतंत्र तब चुप नहीं रह सकता जब हिंसा पड़ोसी देश में अल्पसंख्यकों को निशाना बनाती दिखे, जिसके साथ वह इतिहास, संस्कृति और खून के रिश्ते साझा करता है। लेकिन जब आक्रोश सड़कों पर फैलता है, टेलीविज़न की बयानबाज़ी कठोर हो जाती है और राजनयिक परिसरों में प्रतीकात्मक विरोध प्रदर्शनों में बदल जाता है, तो यह सैद्धांतिक चिंता और राजनीतिक संकेत के बीच की रेखा को धुंधला करने लगता है। ढाका में, ऐसे दृश्यों को आसानी से भारतीय हस्तक्षेप के सबूत के रूप में फिर से पेश किया जाता है। मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाले बांग्लादेश के अंतरिम नेतृत्व को एक मुश्किल काम का सामना करना पड़ रहा है, जिसे उसने अब तक बिगाड़ दिया है। उसे कानून–व्यवस्था बहाल करनी होगी, अल्पसंख्यकों को आश्वस्त करना होगा, और चुनाव के लिए ज़मीन तैयार करनी होगी, यह सब बिना चुनावी जनादेश के। हिंसा की उसकी निंदा सही लगती है, लेकिन भीड़ के हमलों को रोकने और संस्थानों की रक्षा करने में बार–बार की विफलता ने उसके अधिकार को कमजोर कर दिया है।

हर चूक चरमपंथी तत्वों को मजबूत करती है जो बहुलवाद, धर्मनिरपेक्षता और यहां तक घ्धकि स्वतंत्र पत्रकारिता को विदेशी थोपे गए विचारों के रूप में चित्रित करते हैं। गहरा खतरा अब आकार ले रहे बयानबाज़ी के युद्ध में है। बांग्लादेश में, आलोचक. ों को "भारत समर्थक" कहना अमानवीयकरण का एक शॉर्टकट बन गया है। भारत में, बांग्लादेश को पूरी तरह से धार्मिक उग्रवाद की ओर बढ़ते हुए दिखाना उन कई नागरिकों की अनदेखी करना है जो उसी प्रवृत्ति का विरोध कर रहे हैं। दोनों बयानबाज़ी जटिल वास्तविकताओं को सरल बनाती हैं और राजनयिक मरम्मत को कठिन बनाती हैं। रणनीतिक रूप से, भारत एक अस्थिर बांग्लादेश का जोखिम नहीं उठा सकता। उसकी पूर्वी और उत्तर–पूर्वी सुरक्षा, व्यापार मार्ग और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी एक स्थिर पड़ोसी पर निर्भर करती है। बांग्लादेश भी भूगोल से बच नहीं सकता; भारत के साथ दुश्मनी उसके आंतरिक तनावों को हल करने के बजाय और बढ़ाएगी। आगे का रास्ता संयम और यथार्थवाद में है।

सड़क के गुस्से को विदेश नीति तय करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। भारत को अल्पसंख्यक सुरक्षा और डिप्लोमैटिक सुरक्षा पर शांत, मज़बूत बातचीत बनाए रखते हुए बयानबाजी का माहौल ठंडा करना चाहिए। बांग्लादेश के अंत. रिम अधिकारियों को सिर्फ़ बयानबाजी नहीं, बल्कि भीड़ की हिंसा के खिलाफ़ निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए, ताकि राज्य का कानून–व्यवस्था पर एकाधिकार फिर से कायम हो सके। आखिरकार, ढाका में एक भरोसेमंद चुनी हुई सरकार ही रिश्तों को भावनात्मक नहीं, बल्कि संस्थागत बुनियाद पर फिर से शुरू करने का सबसे अच्छा मौका देती है। तब तक, दोनों पक्षों को याद रखना चाहिए कि पड़ोसी बदले नहीं जाते। वे या तो उथल–पुथल को संभालना सीखते हैं या उसे आने वाले सालों तक रिश्तों को तय करने देते हैं।

अहंकार की राजनीति और लचर नेतृत्व ने इंडिया गठबंधन को 2025 में बिखेर कर रख दिया

नीरज कुमार दुबे

साल 2025 भारतीय राजनीति में विपक्षी गठबंधन इंडिया (I.N.D.I.A.) के लिए आंतरिक टकराव, रणनीतिक भ्रम और नेतृत्व संकट का वर्ष बनकर उभरा। 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद जिस गठबंधन से यह अपेक्षा की जा रही थी कि वह एक सशक्त, वैकल्पिक राजनीतिक धारा के रूप में उभरेगा, वही 2025 में अपनी ही कमजोरियों से जूझता नजर आया। यह वर्ष विपक्ष के लिए न तो संगठनात्मक मजबूती लेकर आया, न ही वैचारिक स्पष्टता।

सबसे बड़ा और प्रतीकात्मक तथ्य यह रहा कि पूरे 2025 में इंडिया गठबंधन की एक भी औपचारिक बैठक नहीं हुई। किसी भी राजनीतिक गठबंधन के लिए बैठकें केवल औपचारिकता नहीं होतीं, बल्कि संवाद, समन्वय और साझा रणनीति का आधार होती है। बैठकों का न होना यह संकेत देता है कि गठबंधन नाम मात्र का रह गया है, जबकि ज़मीनी स्तर पर दल अपनी–अपनी राह चलने लगे हैं।

दिल्ली विधानसभा चुनावों में यह बिखराव खुलकर सामने आया, जब आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने गठबंधन तोड़कर अलग–अलग चुनाव लड़ने का फैसला किया। 2024 में लोकसभा चुनावों में सीमित तालमेल के बाद यह उम्मीद थी कि दिल्ली में विपक्ष एकजुट रहेगा, लेकिन आपसी अविश्वास और राजनीतिक अहंकार ने इस संभावना को खत्म कर दिया। नतीजा यह हुआ कि विपक्षी वोटों का विभाजन हुआ और इसका लाभ सीधे तौर पर भाजपा को मिला।

इसी तरह महाराष्ट्र में निकाय चुनावों के दौरान कांग्रेस ने एनसीपी (शरद पवार गुट) और शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) से अलग होकर अकेले चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। यह फैसला

उस समय और भी चौंकाने वाला था, जब भाजपा के खिलाफ संयुक्त लड़ाई की बात बार–बार दोहराई जा रही थी। कांग्रेस का यह रुख उसके सहयोगियों के लिए संकेत था कि गठबंधन केवल सुविधा का मंच है, प्रतिबद्धता का नहीं।

बिहार में तस्वीर थोड़ी अलग दिखी। यहां विपक्षी महागठबंधन ने मिलकर चुनाव लड़ा, लेकिन आपसी फूट, नेतृत्व की खींचतान और समन्वय की कमी ने इसे अब तक की सबसे बड़ी हार दिला दी। टिकट वितरण से लेकर प्रचार की रणनीति तक, हर स्तर पर असंतोष और अविश्वास साफ नजर आया। यह हार इसलिए भी ज्यादा चर्चा में रही क्योंकि एकजुटता के बावजूद गठबंधन जनता के बीच एक स्पष्ट, विश्वसनीय विकल्प के रूप में खुद को पेश नहीं कर सका।

2025 में इंडिया गठबंधन के भीतर नेतृत्व को लेकर असमंजस लगातार गहराता गया। समय–समय पर यह मांग उठती रही कि गठबंधन का नेतृत्व केवल कांग्रेस के हाथों में न रहे। तृणमूल कांग्रेस ने इस मांग की खुलकर अगुवाई की, यह कहते हुए कि क्षेत्रीय दलों की राजनी. तिक ताकत और जनाधार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

उधर, कांग्रेस की यह समस्या रही कि वह गठबंधन का नेतृत्व तो करना चाहती है, लेकिन उसके अनुरूप लचीलापन और सामूहिकता दिखाने में अक्सर विफल रहती है। यही कारण है कि उसके कई सहयोगी दल उसके रुख से इत्तेफाक नहीं रख पाए।

साथ ही इंडिया गठबंधन के भीतर मतभेद केवल चुनावी रणनीति तक सीमित नहीं रहे, बल्कि मुद्दों पर भी एकरूपता का अभाव साफ दिखा। जम्मू–कश्मीर की नेशनल कांफ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला का बयान इस संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने स्पष्ट कहा कि "एसआईआर के विरोध में कांग्रेस के उतरने का मतलब यह नहीं है कि वह हमारी भी लड़ाई हो।" यह बयान सिर्फ एक मुद्दे पर असहमति नहीं था, बल्कि यह दर्शाता था कि गठबंधन के घटक दल अपनी–अपनी क्षेत्रीय प्राथमिकताओं और राजनीतिक मजबूरियों के अनुसार फैसले ले रहे हैं। ऐसे ही विचार समय–समय पर अन्य सहयोगी दलों की ओर से भी सामने आते रहे, जिससे गठबंधन की साझा वैचारिक जमीन और भी कमजा. ेर होती चली गई।

इसी कड़ी में यदि राहुल गांधी की भूमिका का विश्लेषण किया जाए तो 2025 उनके लिए भी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाने का वर्ष साबित हुआ। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में उनसे यह उम्मीद की जा रही थी कि वह महंगाई, बेरोजगारी, किसानों और मध्यम वर्ग से जुड़े जनहित के मुद्दों पर सरकार को घेरेंगे, लेकिन वह अधिकतर समय चुनाव आयोग पर निशाना साधने और संवैधानिक संस्थानों को कठघरे में खड़ा करने में व्यस्त नजर आए। इससे न केवल उनकी भूमिका पर सवाल खड़े हुए, बल्कि विपक्ष की विश्वसनीयता को भी नुकसान पहुंचा। कांग्रेस की अंदरूनी खींचतान, खासकर कर्नाटक में नेतृत्व और सत्ता संतुलन से जुड़े विवाद, का समाधान निकालने में भी वह विफल रहे। इसके अलावा पूरे वर्ष दिए गए उनके कई बयानों ने कांग्रेस ही नहीं, बल्कि उसके सहयोगी दलों की भी मुश्किलें बढ़ाईं, जिससे इंडिया गठबंधन के भीतर असहजता और अविश्वास और गहराता चला गया। देखा जाये तो साल 2025 विपक्षी इंडिया गठबंधन के लिए एक बड़ा अवसर हो सकता था, लेकिन यह वर्ष आपसी अविश्वास, नेतृत्व संघर्ष और रणनीतिक भ्रम की भेंट चढ़ गया।

बहरहाल, इंडिया गठबंधन अगर भविष्य में प्रासंगिक बने रहना चाहता है, तो उसे नाम से आगे बढ़कर वास्तविक राजनी. तिक एकजुटता दिखानी होगी। साझा मंच, नियमित संवाद, स्पष्ट नेतृत्व संरचना और क्षेत्रीय दलों की आकांक्षाओं का सम्मान किये बिना यह गठबंधन केवल कागजी रह जाएगा। 2025 ने विपक्ष को यह सख्त संदेश दे दिया है कि बिखराव की राजनी. ति सत्ता का विकल्प नहीं बन सकती।

त्याग और बलिदान के सच्चे प्रतीक गुरू गोबिंद सिंह

योगेश कुमार गोयल

सिखों के 10वें गुरु गोबिंद सिंह जी का प्रकाश पर्व इस वर्ष 27 दिसंबर को मनाया जा रहा है। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार गुरु गोबिंद सिंह का जन्म 1667 ई. में पौष माह की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को 1723 विक्रम संवत् को पटना साहिब में हुआ था। प्रतिवर्ष इसी दिन गुरु गोबिंद सिंह का प्रकाशोत्सव मनाया जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी को बचपन में गोबिंद राय के नाम से जाना जाता था। उनके पिता गुरु तेग बहादुर सिखों के 9वें गुरु थे। पटना में रहते हुए गुरू जी तीर–कमान चलाना, बनावटी युद्ध करना इत्यादि खेल खेला करते थे, जिस कारण बच्चे उन्हें अपना सरदार मानने लगे थे। पटना में वे केवल 6 वर्ष की आयु तक ही रहे और सन् 1673 में सपरिवार आनंदपुर साहिब आ गए। यहीं पर उन्होंने पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, बृज, फारसी भाषाएं सीखने के साथ घुड़सवारी, तीरंदा. जी, नेजेबाजी इत्यादि युद्धकलाओं में भी महारत हासिल की। कश्मीरी पंडितों के धार्मिक अधिक. ारों की रक्षा के लिए उनके पिता और सिखों के 9वें गुरु तेग बहादुर जी द्वारा नवम्बर 1975 में दिल्ली के चांदनी चौक में शीश कटाकर शहादत दिए जाने के बाद मात्र 9 वर्ष की आयु में ही गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिखों के 10वें गुरू पद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभाली और खालसा पंथ के संस्थापक बने।

शौर्य, साहस, त्याग और बलिदान के सच्चे प्रतीक तथा इतिहास को नई धारा देने वाले अद्वितीय, विलक्षण और अनुपम व्यक्तित्व के स्वामी गुरु गोबिंद सिंह जी को इतिहास में एक विलक्षण क्रांतिकारी संत व्यक्तित्व का दर्जा प्राप्त है। वे कहते थे कि किसी भी व्यक्ति को

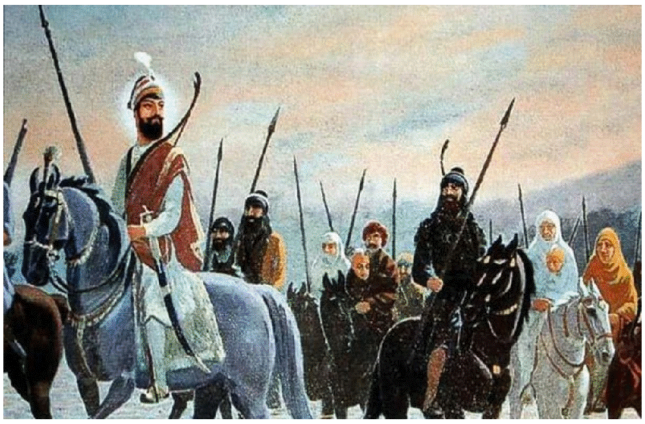

न किसी से डरना चाहिए और न ही दूसरों को डराना चाहिए। उन्होंने समाज में फैले भेदभाव को समाप्त कर समानता स्थापित की थी और लोगों में आत्मसम्मान तथा निडर रहने की भावना पैदा की। एक आध्यात्मिक गुरु होने के साथ–साथ वे एक निर्भयी योद्धा, कवि, दार्शनिक और उच्च कोटि के लेखक भी थे। उन्हें विद्वानों का संरक्षक भी माना जाता था। दरअसल कहा जाता है कि 52 कवियों और लेखकों की उपस्थिति सदैव उनके दरबार में बनी रहती थी और इसीलिए उन्हें 'संत सिपाही' भी कहा जाता था। उन्होंने स्वयं कई ग्रंथों की रचना की थी।

'बिचित्र नाटक' को गुरु गोबिंद सिंह की आत्मकथा माना जाता है, जो उनके जीवन के विषय में जानक. ारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। यह 'दशम ग्रंथ' का एक भाग है, जो गुरु गोबिंद सिंह की कृतियों के संकलन का नाम है। इस दशम ग्रंथ की रचना गुरु जी ने हिमाचल के पोंटा साहिब में की थी। कहा जाता है कि एक बार गुरु गोबिंद सिंह अपने घोड़े पर सवार होकर हिमाचल प्रदेश से गुजर रहे थे और एक स्थान पर उनका घोड़ा अपने आप आकर रुक गया। उसी के बाद से उस जगह को पवित्र माना जाने लगा और उस जगह को पोंटा साहिब के नाम से जाना जाने लगा। दरअसल 'पोंटा' शब्द का अर्थ होता है 'पांव' और जिस जगह पर घोड़े के पांव अपने आप थम गए, उसी जगह को पोंटा साहिब नाम दिया गया। गुरु जी ने अपने जीवन के चार वर्ष पोंटा साहिब में ही बिताए, जहां अभी भी उनके हथियार और कलम रखे हैं।

1699 में बैसाखी के दिन तख्त श्री केसगढ़ साहिब में कड़ी परीक्षा के बाद पांच सिखों को 'पंज प्यारे' चुनकर गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी, जिसके बाद प्रत्येक सिख के लिए कृ पाण या श्रीसाहिब धारण करना अनिवार्य कर दिया गया। वहीं पर उन्होंने 'खालसा वाणी' भी दी, जिसे 'वाहे गुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह' कहा जाता है। उन्होंने जीवन जीने के पांच सिद्धांत दिए थे, जिन्हें 'पंच ककार' (केश, कड़ा, कृपाण, कंघा और कच्छा) कहा जाता है। गुरु गोबिंद सिंह ने ही 'गुरु ग्रंथ साहिब' को सिखों के स्थायी गुरु का दर्जा दिया था। सन् 1708 में गुरु गोबिंद सिंह ने महाराष्ट्र के नांदेड़ में शिविर लगाया था। वहां जब उन्हें लगा कि अब उनका अंतिम समय आ गया है, तब उन्होंने संगतों को आदेश दिया कि अब गुरु ग्रंथ साहिब ही आपके गुरु हैं। गुरु जी का जीवन दर्शन था कि धर्म का मार्ग ही सत्य का मार्ग है और सत्य की हमेशा जीत होती है। वे कहा करते थे कि मनुष्य का मनुष्य से प्रेम ही ईश्वर की भक्ति है, अतः जरूरतमंदों की मदद करो। अपने उपदेशों में उनका कहना था कि ईश्वर ने मनुष्यों को इसलिए जन्म दिया है ताकि वे संसार में अच्छे कर्म करें और बुराई से दूर रहें।

उन्होंने कई बार मुगला. ें को परास्त किया। आनंदपुर साहिब में तो मुगलों से उनके संघर्ष और उनकी वीरता का स्वर्णिम इतिहास बिखरा पड़ा है। सन् 1700 में दस हजार से भी ज्यादा मुगल सैनिकों को सिख जांबाजों के सामने मैदान छोड़कर भागना पड़ा था और गुरु जी की सेना ने 1704 में मुगलों के अलावा उनका साथ दे रहे पहाड़ी हिन्दू शासकों को भी करारी शिकस्त दी थी। मुगल शासक औरंगजेब की भारी–भरकम सेना को भी आनंदपुर साहिब में दो–दो बार धूल चाटनी पड़ी थी। गुरु गोबिंद सिंह के चारों पुत्र अजीत सिंह, फतेह सिंह, जोरावर सिंह और जुझार सिंह भी उन्हीं की भांति बेहद निडर और बहादुर योद्धा थे। अपने धर्म की रक्षा के लिए मुगलों से लड़ते हुए गुरु गोबिंद सिंह ने अपने पूरे परिवार का बलिदान कर दिया था। उनके दो पुत्रों बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह ने चमकौर के युद्ध में शहादत प्राप्त की थी। 26 दिसम्बर 1704 को गुरु गोबिंद सिंह के दो अन्य साहिबजादों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं करने पर सरहिंद के नवाब द्वारा दीवार में जिंदा चुनवा दिया गया था और माता गुजरी को किले की दीवार से गिराकर शहीद कर दिया गया था। गुरु गोबिंद सिंह ने 7 अक्टूबर 1708 को महाराष्ट्र के नांदेड़ में स्थित श्री हुजूर साहिब में अपने प्राणों का त्याग किया था।

Created by Universal Document Converter

पुस्तक समीक्षा

समय, समाज और संसार का ज्योतिषीय दर्पण

डायमंड वार्षिक राशिफल 2026: ज्योतिष, काल–विज्ञान और समकालीन विश्व का दर्पण

उमेश कुमार सिंह

भारतीय ज्योतिष साहित्य की समृद्ध परंपरा में "डायमंड वार्षिक राशिफल 2026" एक ऐसी कृति के रूप में सामने आती है, जो केवल भविष्यकथन तक सीमित न रहकर समय, समाज, राष्ट्र और विश्व की समग्र चेतना को स्पर्श करती है। पं. रमेश भोजराज द्विवेदी द्वारा रचित यह ग्रंथ ज्योतिष को एक जीवंत, गतिशील और कर्मप्रधान विज्ञान के रूप में प्रस्तुत करता है। यह पुस्तक उन पाठकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो ज्योतिष को अंधविश्वास नहीं, बल्कि काल–विज्ञान और जीवन–दर्शन के रूप में समझना चाहते हैं। डायमंड पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित डायमंड वार्षिक राशिफल 2026 जिसके लेखक पं. रमेश भोजराज द्विवेदी है इसमें 2025 के अन्तिम चार माह का राशिफल सहित 12 राशियों का साप्ताहिक भविष्यफल है।

पुस्तक की भूमिका से ही लेखक यह स्पष्ट कर देते हैं कि ज्योतिषशास्त्र का उद्गम ब्रह्मांड की उत्पत्ति के साथ जुड़ा हुआ है। अनंत आकाश, अनंत ग्रह–पिंड और सीमित मानव–बुद्धि के संदर्भ में लेखक का विवेचन दार्शनिक गहराई लिए हुए है। वे यह स्थापित करते हैं कि ज्योतिष केवल भविष्य बताने का माध्यम नहीं, बल्कि समय को समझने, उसके प्रभावों को पहचानने और कर्म के लिए प्रेरित करने वाला शास्त्र है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उपनिषदिक भावना को केंद्र में रखकर ज्योतिष को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक बताया गया है।

ग्रंथ का एक सशक्त पक्ष इसका ऐतिहासिक विवेचन है। ऋग्वैदिक काल से लेकर आधुनिक समय तक ज्योतिषशास्त्र की यात्रा को लेखक ने प्रमाणों, मतांतरों और विद्वानों के संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया है। लोकमान्य तिलक, पं. रघुनंदन शर्मा जैसे विद्वानों के मतों का उल्लेख यह दर्शाता है कि लेखक का दृष्टिकोण केवल पारंपरिक नहीं, बल्कि शोधपरक भी है। इससे पाठक को यह समझने में सहायता मिलती है कि ज्योतिष भारतीय ज्ञान–परंपरा का एक केंद्रीय स्तंभ रहा है, जिसने गणित, कृषि, खगोल, मौसम विज्ञान और धार्मिक अनुष्ठानों को दिशा दी।

डायमंड राशिफल 2026 का मुख्य आकर्षण वर्ष 2026 के वैश्विक और राष्ट्रीय भविष्यफल का विस्तृत विश्लेषण है। लेखक वर्ष 2026 को विश्व के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण बताते हैं। शनि का मीन राशि में गोचर, बृहस्पति की अतिचारी गति, राहु–केतु की स्थितियांकृइन सभी ग्रहयोगों के आधार पर विश्व राजनीति, युद्ध की संभावनाओं, प्राकृतिक आपदाओं और आर्थिक अस्थिरता का जो चित्र उभरता है, वह पाठक को सोचने पर विवश करता है। लेखक ने 2025 से 2030 तक के कालखंड को मानव सभ्यता के लिए संकटपूर्ण बताया है और इसे केवल कल्पना नहीं, बल्कि ग्रह–स्थितियों का तार्किक परिणाम सिद्ध करने का प्रयास किया है।

पुस्तक में वैश्विक राजनीति का ज्योतिषीय विश्लेषण विशेष ध्यान आकर्षित करता है। अमेरिका, चीन, रूस, इज़राइल, पाकिस्तान, भारत जैसे देशों की भूमिका को ग्रहयोगों के संदर्भ में समझाया गया है। लेखक का यह कहना कि अतिचारी बृहस्पति और वक्री शनि विश्व तनाव को और बढ़ाएंगे, पुस्तक को समसामयिक और प्रासंगिक बनाता है। हालांकि विषय गंभीर है, फिर भी भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण है, जिससे सामान्य पाठक भी इसे समझ सकता है।

भारत के संदर्भ में प्रस्तुत भविष्यफल पुस्तक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि वर्ष 2026 भारत के लिए भी पूरी तरह अनुकूल नहीं रहेगा। आर्थिक चुनौतियां, महंगाई, बेरोजगारी, राजनीतिक दबाव और विदेश नीति से जुड़े तनावकृइन सभी बिंदुओं पर ज्योतिषीय दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह भी रेखांकित किया गया है कि केंद्र सरकार की स्थिरता बनी रहेगी, हालांकि कुछ राज्यों में चुनावी परिणाम अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होंगे। यह संतुलित दृष्टिकोण पुस्तक को अतिरंजना से बचाता है।

आर्थिक भविष्यफल के संदर्भ में लेखक ने वैश्विक मंदी, महंगाई, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में वृद्धि और शेयर बाजार की अस्थिरता पर जो संकेत दिए हैं, वे पाठक को सावधान रहने का संदेश देते हैं। यह ज्योतिष को केवल भविष्यवाणी नहीं, बल्कि चेतावनी और मार्गदर्शन का माध्यम बनाता है। लेखक का यह कथन कि ज्योतिष कर्म का विज्ञान है, यहां पूर्णतः सार्थक प्रतीत होता है।

पुस्तक का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि इसमें ज्योतिष और विज्ञान के बीच के कथित संघर्ष पर भी विमर्श किया गया है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि एस्ट्रोनॉमी और एस्ट्रोलॉजी दोनों के क्षेत्र अलग हैं, किंतु एक–दूसरे के पूरक भी हो सकते हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक पाठक को ज्योतिष के प्रति अधिक तार्किक और संतुलित दृष्टि प्रदान करता है।

लेखक पं. रमेश भोजराज द्विवेदी का व्यक्तित्व और ज्योतिषीय यात्रा भी पुस्तक को विशेष बनाती है। अपने पिता, ज्योतिष शिखर पुरुष पं. भोजराज द्विवेदी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने ज्योतिष को सेवा, साधना और समाजोपयोगी विद्या के रूप में स्थापित किया है। उनके अनुभव, प्रशिक्षण शिविर, शिष्य–परंपरा और सामाजिक सेवा के उल्लेख पुस्तक की विश्वसनीयता को और सुदृढ़ करते हैं।

भाषा की दृष्टि से पुस्तक गंभीर विषयों के बावजूद बोझिल नहीं लगती। संस्कृतनिष्ठ हिंदी, शास्त्रीय उद्धरण और आधुनिक संदर्भकृइनका संतुलित प्रयोग इसे विद्वानों और सामान्य पाठकों दोनों के लिए पठनीय बनाता है। डायमंड राशिफल की लोकप्रियता, विभिन्न भाषाओं में उपलब्धता और निरंतर 33 वर्षों से प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि यह केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि एक विश्वसनीय परंपरा बन चुकी है।

समग्र रूप से डायमंड वार्षिक राशिफल 2026 एक ऐसी कृति है, जो ज्योतिष में आस्था रखने वालों के लिए मार्गदर्शक है और संदेह रखने वालों के लिए विचारोत्तेजक। यह पुस्तक भविष्य के प्रति भय नहीं, बल्कि सजगता और कर्मशीलता का संदेश देती है। क्योंकि यह समय की नब्ज को समझने का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैकृजहां ग्रह, काल और कर्म मिलकर मानव जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं।

यह पुस्तक न केवल एक ज्योतिषीय ग्रंथ है, बल्कि समय, समाज और संस्कृति पर चिंतन का दस्तावेज़ भी है। इसकी विषयवस्तु सहमति या असहमति से परे जाकर पाठक को सोचने, प्रश्न करने और भारतीय ज्ञान परंपरा को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करती है।

पुस्तक का नाम: डायमंड वार्षिक राशिफल 2026

लेखक: पं. रमेश भोजराज द्विवेदी

प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स

समीक्षक: उमेश कुमार सिंह

एवी के न्यूज सर्विस

जेलों में निरूद्ध नौनिहालों का भविष्य क्या...?

सुरेश सिंह बैस "शाश्वत"

भारत में जेलों में पल रहे नौनिहालों का भविष्य वाकई में गंभीर संकटों से घिरा हुआ है। ऐसे बच्चों के जीवन और व्यक्तित्व के विकास की संभावना जेल की दीवारों के भीतर लगभग अवरुद्ध हो जाती है, जिससे उनका बचपन अंधकारमय हो जाता है। छत्तीसगढ़ जब मध्य प्रदेश के अंतर्गत आता था तब मैंने भी बंदी कल्याणारार्थ किरण परियोजना के अंतर्गत बिलासपुर जेल में कई वर्ष कार्य किया था। जिसके तहत बंदी कल्याण के सभी कार्यो को करने की जिम्मेदारी थी। चाहे वह कानूनी हो पुनर्वास और शिक्षा हो या अन्य मानवीय समस्याओं का समाधान हो। यह बहुत ही अच्छी और सुदृढ़ परियोजना थी। जिसकी पहल तत्कालीन संभाग आयुक्त उपाध्याय जी द्वारा शुरू की गई थी। इस परियोजना के परिणाम भी बहुत अच्छे आ रहे थे लेकिन दुर्भाग्य छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पश्चात इस परियोजना को बंद कर दिया गया।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देशभर कई हजार बच्चे अपनी माताओं के साथ विभिन्न जेलों में रहते हैं। इनमें से बहुसंख्यक उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और झारखंड जैसी राज्यों में हैं। ऐसे बच्चों को स्वाभाविक बालपन, उचित शिक्षा और सामाजिक अवसरों से वंचित रहना पड़ता है। जेल का वातावरण उनके मानसिक और शारीरिक विकास को प्रभावित करता है।

जेलों में क्षमता से अधिक कैदियों की भीड़ है, जिसके कारण संसाधन और सुविधाएं पहले से ही सीमित होती हैं। बच्चों को पर्याप्त स्वास्थ्य, पोषण और खेलकूद की सुविधा नहीं मिल पाती। स्वास्थ्य सेवाओं, शैक्षिक वातावरण और बच्चों के लिए सकारात्मक सामाजिक माहौल की भारी कमी है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास, संप्रेषण कौशल और सामाजिक समझ कमजोर पड़ती है ऐसे बच्चे, किशोर किशोरिया जिन्हें बाहरी अभिभावक परिवार या समाज का सहारा नहीं मिलता है वह अतिरिक्त मानसिक दबाव व असुरक्षा के साथ बड़े होते हैं।

सरकार और प्रशासन को चाहिए कि ऐसे निरूद्ध बच्चों के लिए जेल परिसर से बाहर सुरक्षित आश्रय, शिक्षा, मानसिक परामर्श, स्वास्थ्य और पुनर्वास की व्यवस्था सुनिश्चित करें। वहीं कानूनों में संशोधन करके ऐसे मामलों में बच्चों को प्राथमिकता दी जाए और वह जेल के बजाय संस्थागत देखभाल या परिवार के संरक्षण में रह सके, साथ ही महिलाओं के लिए खुली जेल या ट्रांजिट होम जैसी व्यवस्थाएं मिल सके, जहां माँ और बच्चे मानवीय गरिमा के साथ गुजारा कर सकें।

सरकार और जेल प्रशासन को बाल अधिकारों की रक्षा और बच्चों के कल्याण के लिए एकरूपता के साथ नीति लागू करने की आवश्यकता है ताकि हर बच्चे को समान अवसर मिल सके। जेल में निरूद्ध बंदियों के बच्चों का भविष्य संवारने और उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने में जेल प्रशासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जेल का माहौल बच्चों के लिए सुरक्षित और अनुकूल बनाना, सामाजिक कलंक और बहिष्कार से बचाना, तथा पारिवारिक माहौल की कमी को दूर करना प्रशासन की जिम्मेदारी है। जेल प्रशासन को बच्चों के अधिकारों का सम्मान करना होगा और शिक्षा, सुरक्षा और संपूर्ण विकास के लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिससे जेल में रहते हुए भी इन बच्चों का भविष्य जेल प्रशासन को बच्चों के सर्वांगीण विकास, शिक्षा और संरक्षण के लिए विशेष प्रबंध करने चाहिए, जिससे वे समाज की मुख्यधारा से कट न जाएं और उनका बचपन जेल की सलाखों में कैद न हो।

कई जेलों में बाल संरक्षण नीति के तहत आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य, खेल और शिक्षा की सुविधाएं शुरू की गई हैं, परन्तु ये पूरे देश में एकसमान लागू नहीं हैं? जेल का माहौल बच्चों के लिए सुरक्षित और अनुकूल बनाना, सामाजिक कलंक और बहिष्कार से बचाना, तथा पारिवारिक माहौल की कमी को दूर करना प्रशासन की जिम्मेदारी है। जेल प्रशासन को बच्चों के अधिकारों का सम्मान करना होगा और शिक्षा, सुरक्षा और संपूर्ण विकास के लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिससे जेल प्रशासन की देखरेख में रहते हुए भी इन बच्चों का भविष्य संवर सके और वे बड़े होकर देश के एक जिम्मेदारी नागरिक की भूमिका निभा सके।

बचपन की नींव पर ही जीवन का भवन टिका होता है; जेलों में पलते बच्चों का वह स्वप्निल भविष्य वर्तमान व्यवस्था की सीमाओं में कैद हो जाता है। इसलिए ऐसे नौनिहालों के लिए विशेष और संवेदनशील नीतियों और व्यवस्थाओं की तत्काल आवश्यकता है, ताकि उनका भविष्य फिर से रोशन हो सके।

जेल में निरूद्ध बंदियों के बच्चों का भविष्य संवारने और उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने में जेल प्रशासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जेल का माहौल बच्चों के लिए सुरक्षित और अनुकूल बनाना, सामाजिक कलंक और बहिष्कार से बचाना, तथा पारिवारिक माहौल की कमी को दूर करना प्रशासन की जिम्मेदारी है।

जेल प्रशासन को बच्चों के अधिकारों का सम्मान करना होगा और शिक्षा, सुरक्षा और संपूर्ण विकास के लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिससे जेल में रहते हुए भी इन बच्चों का भविष्य जेल प्रशासन को बच्चों के सर्वांगीण विकास, शिक्षा और संरक्षण के लिए विशेष प्रबंध करने चाहिए, जिससे वे समाज की मुख्यधारा से कट न जाएं और उनका बचपन जेल की सलाखों में कैद न हो।

हालांकि जेल प्रशासन द्वारा महिला बंदियों के बच्चों के लिए 'सुरक्षित बचपन योजना' जैसी पहल की गई है, जिसमें संरक्षण, शिक्षा और पोषण की जिम्मेदारी जिला प्रशासन एवं संबंधित विभागों की संयुक्त समिति को दी जाती है। यह एक अच्छी पहल है जिनका स्वागत किया जाना चाहिए।

सुरेश सिंह बैस "शाश्वत"

कोरियन महिलाओं की तरह ग्लोइंग स्किन, चावल के पानी के ये 3 तरीके कर देंगे कमाल

अनन्या मिश्रा

अक्सर कोरियाई लोगों की ग्लास स्किन की काफी तारीफ की जाती है। खासतौर पर लड़कियां चाहती हैं कि उनकी त्वचा कोरियाई महिलाओं की तरह सॉफ्ट और ग्लोइंग नजर आए। लेकिन कोरियन स्किन केयर काफी महंगा होता है। वहीं यह भी समझ नहीं आता है कि फेस पर क्या लगाया जाए और क्या नहीं। वहीं कोरियन लोग भी स्किन केयर में ढेर सारे घरेलू नुस्खे आजमाते हैं। इन्हीं में से एक नुस्खा चावल के पानी का है।

कोरियन महिलाएं भी अपने स्किन केयर में चावल के पानी का इस्तेमाल करती हैं। बता दें कि चावल का पानी अलग–अलग तरह से तैयार किया जा सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि आप किस तरह से चावल का पानी बना सकती हैं और इसको किस तरह से इस्तेमाल करना चाहिए।

ग्लोइंग त्वचा के लिए चावल का पानी

फेस पर चावल का पानी लगाने से त्वचा को कई एंटी–ऑक्सीडेंट्स मिलते हैं। इससे फेस को एंटी एजिंग गुण भी मिलते हैं। वहीं चावल का पानी लगाने से स्किन से दाग–धब्बे हल्के होते हैं और झाइयों से भी छुटकारा मिलता है। चावल का पानी इस्तेमाल करने से स्किन में निखार आता है। ऐसे में अगर आप भी अपनी स्किन को ग्लोइंग और जवां बनाना चाहती हैं, तो आप चावल के पानी का इस्तेमाल कर सकती हैं।

चावल भिगोकर पानी बनाएं

आप घर पर कई तरह से चावल का पानी बना सकती हैं। इसको बनाने के लिए 2–3 कप पानी में 1 कप चावल भिगोकर करीब 30 मिनट के लिए रखें। अब आप इस पानी को फ्रिज में स्टोर करके भी रख सकती हैं।

चावल उबालकर बनाएं पानी

आप चावल के पानी को उबालकर भी चावल का पानी बना सकती हैं। इसके लिए एक कप चावल को पकाने के लिए बर्तन में रख दें। जब चावल पक जाए, तो इसका एक्स्ट्रा पानी फेंकने की जगह उसको अलग बोतल में भरकर रख लें।

फर्मेंट करके बनाएं

सबसे पहले चावल को भिगोकर रखें और फिर करीब 1 से 2 दिनों तक पानी में चावल को भिगोकर रखें। इस तरह से चावल फर्मेंट हो जाएगा। इस पानी को छानकर अलग करें और इसको अपने फेस पर लगाएं।

कैसे लगाएं चेहरे पर चावल का पानी

आप चावल के पानी को चेहरे पर टोनर की तरह लगा सकती हैं।

फेस धोने के लिए आप चावल के पानी का इस्तेमाल कर सकती हैं।

चावल के पानी को फेस पर स्प्रे करने से स्किन को फौरन ताजगी मिलती है।

फेस को मसाज करने के लिए भी आप चावल के पानी का इस्तेमाल कर सकती हैं।

हर्ब्स को हफ्तों तक ताजा रखने के आसान घरेलू तरीके, जानें यहां

मिताली जैन

खाने के अगर फ्रेश हर्ब्स का इस्तेमाल किया जाए तो इससे टेस्ट पूरी तरह से बदल सकता है। करीपत्ते से लेकर धनिया व पुदीना खाने के टेस्ट को नेक्स्ट लेवल पर ले जाते हैं। अमूमन हम मार्केट से इन हर्ब्स का एक बड़ा गुच्छा खरीदते हैं, लेकिन एक बार में इन्हें थोड़ा सा ही इस्तेमाल किया जाता है और फिर बाकी कुछ ही दिनों में फ्रिज में खराब हो जाता है। ऐसे में पैसे यू ही वेस्ट हो जाते हैं। हम सभी के साथ अक्सर ऐसा होता है।

हालांकि, ऐसे में आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। आपको शायद पता ना हो, लेकिन अगर आप थोड़ा स्मार्ट तरीका अपनाते हैं तो ऐसे में इन हर्ब्स को महीनों तक भी आसानी से स्टोर किया जा सकता है। इससे आप उन्हें लंबे समय तक बिना किसी परेशानी के आसानी से इस्तेमाल कर पाएंगे। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में–

ठीक से धोएं और सुखाएं

अगर आप हर्ब्स को स्टोर करना चाहते हैं तो पहले उन्हें अच्छी तरह धोकर सुखाएं। इसके लिए आप हर्ब्स को ठंडे पानी में धीरे से धोएं। फिर एक्स्ट्रा पानी झाड़कर उन्हें एक साफ तौलिए पर फैलाएं। अब इन हर्ब्स को पूरी तरह से सूखने दें। ध्यान रखें कि अगर इनमें नमी रह जाती है, तो हर्ब्स जल्दी खराब हो जाती हैं।

आजमाएं पेपर टॉवल रैप तरीका

अगर आप धनिया, पुदीना, अजमोद, डिल जैसी हर्ब्स को स्टोर करना चाहती हैं तो ऐसे में पेपर टॉवल रैप तरीके को आजमाएं। इसके लिए आप हर्ब्स को सूखे पेपर टॉवल पर रखें, फिर धीरे से रोल करें। अब इसे एयरटाइट बॉक्स में रखें। इस तरह हर्ब्स 1–2 हफ्ते तक खराब नहीं होती हैं। आप हर दिन कुछ मात्रा में इन हर्ब्स का इस्तेमाल कर सकते हैं।

करें फ्रीज

अगर आप हर्ब्स को महीनों तक स्टोर करना चाहते हैं तो ऐसे में उन्हें फ्रीज करना सबसे अच्छा रहता है। इसके लिए आप साबुत पत्तियों को धोकर सुखा लें। अब इन्हें जिप बैग में स्टोर करें और फ्रीज करें। इसके अलावा हर्ब्स से आइस क्यूब भी बनाए जा सकते हैं। इसके लिए आप हर्ब्स को काटें और आइस ट्रे में डालें। इसे पानी या जैतून के तेल से भरकर फ्रीज करें। सूप, दाल, ग्रेवी के लिए यह बहुत बढ़िया ऑप्शन है। इस तरह आपकी हर्ब्स 3–6 महीने तक आसानी से चल जाती हैं।

Created by Universal Document Converter

हिन्दू धर्म और संस्कृति के रक्षक थे गुरु गोविन्द सिंह

ललित गर्ग

भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में गुरु गोविंद सिंह जी का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण और प्रेरणादायी है। वे केवल सिख धर्म के दसवें गुरु ही नहीं थे, बल्कि एक महान योद्धा, दार्शनिक, समाज–सुधारक, हिन्दू धर्म–संस्कृति के रक्षक और राष्ट्र–चेतना के जाग्रत प्रतीक थे। उनकी महान् तपस्वी, महान् कवि, महान् योद्धा, महान् संत सिपाही साहिब आदि स्वरूपों में पहचान होती है। गुरु गोविंद सिंह की जयंती केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि मानवता को साहस, न्याय, आत्मसम्मान और धर्मरक्षा का संदेश देने वाला पर्व है। उनकी जीवन–यात्रा अन्याय के प्रतिकार, सत्य की स्थापना और मानव गरिमा की रक्षा के लिए समर्पित रही। वे संपूर्ण भारतीय समाज के आस्था के केंद्र हैं, उनके जीवन से हमें राष्ट्रप्रेम और मानवतावादी धर्म की प्रेरणा मिलती है।

गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को पटना साहिब (वर्तमान बिहार) में हुआ। उनके पिता गुरु तेग बहादुर जी सिखों के नौवें गुरु थे, जिन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। पिता के इस अद्वितीय त्याग ने गुरु गोविंद सिंह जी के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित किया। बहुत कम आयु में ही उन्होंने यह समझ लिया कि धर्म केवल पूजा–पाठ तक सीमित नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी है। उनका संपूर्ण जीवन संघर्ष, तपस्या और सेवा का अद्भुत संगम रहा। उन्होंने धर्म को कर्म से जोड़ा और आध्यात्मिकता को सामाजिक उत्तरदायित्व का रूप दिया। उनका स्पष्ट संदेश था कि सच्चा धर्म वह है जो निर्बलों की रक्षा करे, अत्याचार का विरोध करे और मानव को आत्मसम्मान के साथ जीना सिखाए। वे कहते थे कि भय से मुक्त होकर सत्य के मार्ग पर चलना ही सच्ची भक्ति है।

1699 में बैसाखी के पावन अवसर पर गुरु गोविंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना कर इतिहास की दिशा ही बदल दी। खालसा का अर्थ है–शुद्ध, निर्भीक और समर्पित जीवन। उन्होंने पाँच प्यारे बनाकर समानता, भाईचारे और त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। खालसा की दीक्षा के माध्यम से उन्होंने जाति, वर्ग और ऊँच–नीच के भेद को समाप्त कर दिया। उन्होंने खालसा पंथ के अनुयायियों को पंच ककार केश, कड़ा, कंघा, कृपाण, कच्छा धारण करने का निर्देश दिया। ये शौर्य, शुचिता तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के संकल्प के प्रतीक हैं। गुरु ने सिखाया कि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं और सबका सम्मान समान है। गुरु गोविंद सिंह की शिक्षाओं का केंद्रबिंदु साहस और करुणा का संतुलन है। वे एक ओर शस्त्र धारण करने की प्रेरणा देते हैं, तो दूसरी ओर दया, प्रेम और सेवा को जीवन का आधार बताते हैं। उनका प्रसिद्ध कथन–"जब सब उपाय विफल हो जाएँ, तब धर्म के लिए तलवार उठाना न्यायोचित है"–यह स्पष्ट करता है कि हिंसा उनका उद्देश्य नहीं थी, बल्कि अत्याचार के विरुद्ध अंतिम विकल्प थी।

गुरु गोविंद सिंह भारतीय जीवन मूल्यों की रक्षा और समाज को नए सिरे से संगठित एवं सशक्त करने वाले एक महापुरुष हैं, उनका व्यक्तित्व अलौकिक, साहसी एवं भारतीयता से ओतप्रोत था। उन्होंने आनंदपुर का सुख, माता पिता की छांव और बच्चों का मोह छोड़कर धर्म रक्षा का मार्ग चुना। उन्होंने दमन, अन्याय, अधर्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी। गुरु तेग बहादुर के बलिदान के बाद 11 नवंबर 1675 को नौ साल की उम्र में गुरु गोबिंद सिंह सिखों के दसवें गुरु बने। दुनिया में देश व धर्म की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले महापुरुष तो अनेक मिलेंगे किन्तु अपनी तीन पीढ़ियों, बल्कि यों कहें कि अपने पूरे वंश को इस पुनीत कार्य हेतु बलिदान करने वाले विश्व में शायद एकमेव महापुरुष गुरु गोविन्द सिंहजी ही हैं। जिन्होंने त्याग, बलिदान एवं कर्तृत्ववाद का संदेश दिया। भाग्य की रेखाएं स्वयं निर्मित की। स्वयं की अनन्त शक्तियों पर भरोसा और आस्था जागृत की। सभ्यता और संस्कृति के प्रतीकपुरुष के रूप में जिन्होंने एक नया जीवन–दर्शन दिया, जीने की कला सिखलाई। जिनको बहुत ही श्रद्धा व प्यार से कलगीयां, सरबंस दानी, नीले वाला, बाला प्रीतम, दशमेश पिता आदि नामों से पुकारा जाता है। भारत में फैली दहशत, डर और जनता का हारा हुआ मनोबल देखकर उन्होंने कहा "मैं एक ऐसे पंथ का सृजन करूँगा जो सारे विश्व में विलक्षण होगा। जिससे मेरे शिष्य संसार के असंख्य लोगों में पहली ही नजर में पहचाने जा सकेंगे। जैसे हिरनों के झुंड में शेर और बगुलों के झुंड में हंस। वह केवल बाहर से अलग न दिखे बल्कि आंतरिक रूप में भी ऊँचे, साहसी और सच्चे विचारों वाले हो।

गुरु गोविंद सिंह एक महान कवि और विद्वान भी थे। उनकी रचनाएँ 'दसम ग्रंथ' में संकलित हैं, जिनमें वीर रस, भक्ति, नीति और दर्शन का अद्भुत समन्वय मिलता है। उनकी कविताएँ आत्मबल जगाती हैं और जीवन में धर्म व मर्यादा का बोध कराती हैं। उन्होंने भाषा, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से समाज में जागरण का कार्य किया। उनका पारिवारिक जीवन भी त्याग और बलिदान की अनुपम गाथा है। उनके चारों पुत्र–साहिबजादे, धर्म और सत्य की रक्षा करते हुए शहीद हुए। छोटे साहिबजादों को दीवार में चुनवा दिया गया, फिर भी गुरु गोविंद सिंह जी विचलित नहीं हुए। उन्होंने इसे ईश्वर की इच्छा मानकर मानवता को यह संदेश दिया कि सत्य और धर्म की रक्षा के लिए व्यक्तिगत दुख भी स्वीकार्य है। यह जीवन–चरित्र मानव इतिहास में दुर्लभ उदाहरण है।

गुरु गोविंद सिंह जी ने न केवल सिख समुदाय, बल्कि संपूर्ण मानवता को आत्मसम्मान और निर्भीकता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने स्त्रियों को समान सम्मान दिया और सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उनका जीवन बताता है कि आध्यात्मिक व्यक्ति समाज से पलायन नहीं करता, बल्कि समाज को न्यायपूर्ण बनाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाता है। उनका एक अत्यंत क्रांतिकारी निर्णय था–गुरुगद्दी को किसी व्यक्ति के स्थान पर गुरु ग्रंथ साहिब को सौंपना। इससे उन्होंने यह स्पष्ट किया कि गुरु का स्वरूप शाश्वत ज्ञान है, न कि देह। यह निर्णय लोकतांत्रिक चेतना, विनम्रता और आध्यात्मिक परिपक्वता का प्रतीक है। आज जब विश्व हिंसा, असहिष्णुता, भेदभाव और नैतिक संकटों से जूझ रहा है, गुरु गोविंद सिंह की शिक्षाएँ पहले से अधिक प्रासंगिक हो गई हैं। वे हमें सिखाते हैं कि साहस के बिना सत्य अधूरा है और करुणा के बिना शक्ति विनाशकारी। उनका जीवन संतुलित, मूल्यनिष्ठ और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

गुरु गोविन्द सिंहजी का जीवन एक कर्मवीर की तरह था। भगवान श्रीकृष्ण की तरह उन्होंने भी समय को अच्छी तरह परखा और तदनुसार कार्य आरम्भ किया। उनकी प्रमुख शिक्षाओं में ब्रह्मचर्य, नशामुक्त जीवन, युद्ध–विद्या, सदा शस्त्र पास रखने और हिम्मत न हारने की शिक्षाएँ मुख्य हैं। उनकी नजर में सत्ता से ऊंचा स्वराष्ट्र, स्व–अस्तित्व, समाज एवं मानवता का हित सर्वोपरि था। यूं लगता है वे हिन्दू जीवन–दर्शन के पुरोधा बन कर आए थे। उनकी इच्छा थी कि प्रत्येक भारतवासी सिंह की तरह एक प्रबल प्रतापी जाति में परिणत हो जाये और भारत का उद्धार करें। गुरु गोविन्द सिंह जैसे महापुरुष इस धरती पर आये जिन्होंने सबको बदल देने का दंभ तो नहीं भरा पर अपने जीवन के साहस एवं शौर्य से डर एवं दहशत की जिन्दगी को विराम दिया। उनके कारण ही हिन्दू अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को कायम रख पाये।

गुरु गोविंद सिंह जी की जयंती पर देश और दुनिया के लिए उनका संदेश स्पष्ट है–डरो मत, झुको मत और अन्याय के सामने कभी समझौता मत करो। अपने भीतर की शक्ति को पहचानो, पर उसका प्रयोग सदैव धर्म, मानवता और न्याय के लिए करो। सत्य के मार्ग पर चलने वाले को ईश्वर स्वयं शक्ति देता है। आज आवश्यकता है कि हम उनकी शिक्षाओं को केवल स्मरण न करें, बल्कि अपने जीवन में उतारें। सत्यनिष्ठा, सेवा, साहस, समानता और त्याग–यदि ये मूल्य हमारे व्यवहार का हिस्सा बन जाएँ, तो समाज में स्वतः ही शांति और सद्भाव का वातावरण निर्मित होगा। उनकी जयंती हमें यह संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम एक ऐसे विश्व के निर्माण में सहभागी बनें, जहाँ भय नहीं, बल्कि न्याय का शासन हो। उनका जीवन दीपस्तंभ की तरह है, जो अंधकार में भी मार्ग दिखाता है। उनकी शिक्षाएँ समय, देश और सीमाओं से परे हैं।

खाने की आदत बदलें, वरना पछताएंगे, जंक फूड की लत दे रही मोटापे और हार्मोनल असंतुलन को दावत

अनन्या मिश्रा

आज के समय में हमारी दिनचर्या में सुविधाजनक और स्वादिष्ट दिखने वाला जंक फूड तेजी से जगह बना चुका है। खासकर दिल्ली जैसे बड़े शहरों में जंक फूड की खपत काफी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में अब यह एक गंभीर स्वास्थ्य संकट का रूप ले चुकी है। नमकीन, नूडल्स, चिप्स, चॉकलेट, कोल्ड ड्रिंक और ब्रेकफास्ट सीरियल जैसी पैकेट बंद चीजें न सिर्फ बच्चों बल्कि युवाओं की पहली पसंद बन गई है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इनके पीछे छिपे खतरे बेहद गहरे होते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको जंक फूड के सेवन से होने वाले नुकसान के बारे में बताने जा रहे हैं।

कई गुना बढ़ी बिक्री

करीब पिछले 15 सालों में भारत में पैक्ड और अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स की बिक्री काफी ज्यादा बढ़ गई है। एक नई रिपोर्ट के मुताबिक इस साल इन उत्पादों का मार्केट 50 बिलियन डॉलर के करीब पहुंच सकता है। यह तेज बढ़ोतरी एक्सपर्ट्स के लिए चिंता का विषय बन चुकी है। क्योंकि इसका सीधा संबंध बढ़ते मोटापे और उससे

जुड़ी बीमारियों से है।

मोटापा और हार्मोनल असंतुलन

वहीं जंक फूड में पोषण का संतुलन गायब होता है। जंक फूड में फाइबर, विटामिन या प्राकृतिक तत्वों की जगह नमक, चीनी, तेल और आर्टिफिशियल रंग होते हैं। यही कारण है कि इनको खाने के बाद पेट भर जाता है, लेकिन हमारे शरीर को जरूरी ऊर्जा नहीं मिल पाती है। वहीं हमें ऐसी चीजें बार–बार खाने की आदत डाल देती हैं। यह आदत धीरे–धीरे हार्मोनल असंतुलन, मोटापा और सेहत से जुड़ी अन्य समस्याओं को जन्म देती है।

दोगुना बढ़ा मोटापा

बता दें कि देश में मोटापे की स्थिति चिंताजनक है। आंकड़ों के मुताबिक पुरुषों में मोटापे 12 प्रतिशत से बढ़कर 23 प्रतिशत तक पहुंच गया है। वहीं महिलाओं में यह 15 प्रतिशत से बढ़कर 24 प्रतिशत पहुंच चुका है। यानी की कुछ ही सालों में दोनों ही श्रेणियों में मोटापा करीब दोगुना बढ़ा है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह बढ़ोत्तरी उतनी ही खतरनाक है, जितना कि प्रदूषण से फेफड़ों पर पड़ने वाली मार खतरनाक है।

अब नहीं संभले तो कब संभले

इन सभी बातों से साफ है कि जंक फूड का बढ़ता मार्केट सिर्फ स्वाद का मामला नहीं बल्कि एक व्यापक स्वास्थ्य चुनौती बन गया है। जरूर है कि लोग जागरुक हों, घर में स्वास्थ्यवर्धक ऑप्शन को प्राथमिकता दें और बच्चों में सही खानपान की आदतों को विकसित करना चाहिए। अगर अभी यह कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले सालों में मोटापा और इससे जुड़ी बीमारियां ज्यादा तेजी से बढ़ सकती हैं।

वेट लॉस के लिए नींबू पानी या सिरका, किसका करें सेवन

मिताली जैन

आज के समय में हर दूसरा व्यक्ति अपने बढ़े हुए वजन से परेशान है और इसे कम करने के लिए तरह–तरह की डिटॉक्स ड्रिंक पीना पसंद करते हैं। जब वेट लॉस की बात होती है तो इसमें विनेगर और नींबू पानी को बहुत अधिक फायदेमंद माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि ये दोनों ड्रिंक्स फैट बर्निंग में मदद करते हैं और मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करते हैं। जिसकी वजह से आपको फ्लैट टमी मिलता है। लेकिन अक्सर लोग इस बात को लेकर असमंजस में रहते हैं कि इन दोनों में से किसका सेवन किया जाए।

तो आज इस लेख में आसान शब्दों में समझेंगे कि विनेगर और नींबू पानी में क्या अंतर है, वजन घटाने के लिए कौन सी ड्रिंक बेहतर है, इसे कैसे और कब पीना चाहिए–

विनेगर वेट लॉस में किस तरह मदद करता है

विनेगर आपकी भूख थोड़ी कम कर सकता है, जिससे

आपको ज्यादा देर तक पेट भरा हुआ महसूस होगा। साथ ही, यह ब्लड शुगर को भी कंट्रोल करने में मदद कर सकता है, जिससे आपको कम क्रेविंग होती है। यह डाइजेशन को भी बेहतर कर सकता है। विनेगर में एसिटिक एसिड होता है, जो फैट मेटाबॉलिज्म को भी हल्का सपोर्ट करता है।

विनेगर का सेवन किस तरह करें

एक चम्मच विनेगर को एक गिलास पानी में मिलाकर लिया जा सकता है। इसे खाने से पहले लेना सबसे अच्छा है। इसे कभी भी डायलूट किए बिना ना लें, क्योंकि यह एसिडिक होता है।

विनेगर से क्या नुकसान हो सकते हैं

विनेगर आपके दांतों के इनेमल को नुकसान पहुंचा सकता है। इसके अलावा, इससे एसिड रिफ्लक्स, ब्लोटिंग, जलन हो सकती है। बीपी या शुगर की दवाओं के साथ यह दिक्कत कर सकता है। इसलिए अगर आपको गैस्ट्राइटिस, एसिडिटी, अल्सर है या आप बीपी या डायबिटीज की दवाएं ले रहे हैं, तो पहले डॉक्टर से पूछें।

नींबू पानी वेट लॉस में किस तरह मदद करता है

नींबू पानी आपको हाइड्रेटेड रखता है, जिससे आप बेवजह की स्नैकिंग कम होती है। यह डाइजेशन में मदद करता है। यह आपको फ्रेश और हल्का महसूस कराता है। हाइड्रेशन से मेटाबॉलिज्म बेहतर होता है, वॉटर रिटेंशन कम होता है और आप पतले लगते हैं।

नींबू पानी का सेवन किस तरह करें

गर्म पानी में आधा नींबू निचोड़कर लें। आप इसे सुबह या कभी भी ले सकते हैं। अगर आप चाहें तो इसमें थोड़ा शहद भी डाल सकते हैं, लेकिन यह पूरी तरह से ऑप्शनल है।

नींबू पानी से क्या नुकसान हो सकते हैं

नींबू पानी से साइड इफेक्ट होने की संभावना काफी कम होती है। लेकिन सेंसिटिव लोगों में इससे एसिडिटी हो सकती है। इसका बहुत ज्यादा सेवन करने से दांतों का इनेमल खराब हो सकता है।

हाई रिस्क प्रेग्नेंसी में सफर? डॉक्टर की सलाह, ये सावधानियां हैं जरूरी

दिव्यांशी भदौरिया

एक महिला के लिए सबसे खास समय का प्रेग्नेंसी होता है। इस दौरान महिलाएं अपनी केयर काफी करती है। डॉक्टर भी बताते हैं कि प्रेग्नेंसी में ध्यान रखना काफी जरुरी होता है। आजकल महिलाएं काम के चलते ट्रैवल करती हैं, तो हाइ रिस्क प्रेग्नेंसी में ट्रैवल करना कितना सेफ है और इस दौरान कुछ सावधानियां बरतने की सलाह दी जाती है। इस लेख में हम आपको बताएंगे कि हाई रिस्क प्रेग्नेंसी में ध्यान कैसे रखें और किन महिलाओं को हाई प्रेग्नेंसी कैटेगरी में रखा जाता है।

क्या है हाई–रिस्क प्रेग्नेंसी?

डॉक्टर बताते हैं कि हाई–रिस्क प्रेग्नेंसी वह स्थिति होती है, जब गर्भावस्था के दौरान मां या गर्भ में विकसित हो रहे शिशु के स्वास्थ्य पर सामान्य से अधिक खतरा रहता है। इसके पीछे कई तरह के कारण हो सकते हैं, इसलिए गर्भवती महिलाओं के लिए जरूरी है कि वे इन जोखिमों को समझें और विशेष सावधानी बरतें।

– हाई ब्लड प्रेशर या प्री–एक्लेम्पसिया

– डायबिटीज – प्रेग्नेंसी से पहले या प्रेग्नेंसी के दौरान

– एनीमिया

– थायरॉइड से जुड़ी समस्याएं

– पहले मिसकैरेज या प्री–टर्म डिलीवरी की हिस्ट्री

– जुड़वां या ट्रिपलेट्स होना

– प्लेसेंटा प्रीविया या प्लेसेंटा से जुड़ी अन्य समस्याएं

– समय से पहले डिलीवरी का रिस्क

हाई–रिस्क प्रेग्नेंसी में क्या ट्रेवल किया जा सकता है?

डॉक्टर बताते हैं कि इसका हां या नहीं में जवाब देना काफी मुश्किल होता है। दरअसल, हाई–रिस्क प्रेग्नेंसी में सफर करना पूरी तरह मना नहीं किया जाता, हालांकि यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करती हैं कि प्रेग्नेंट महिला का मेडिकल कंडीशन कैसी है, प्रेग्नेंसी का कौन–सा ट्राइमेस्टर चल रहा है और डॉक्टर ने महिला की स्थिति को देखते हुए क्या निर्देश दिए है। यदि गर्भावस्था सामान्य और नियंत्रण में है तथा कोई खास जोखिम नहीं है, तो जरूरी और कम दूरी की यात्रा की अनुमति दी जा सकती है। हालांकि, बिना कारण लंबी, अधिक थकान देने वाली या जोखिम भरी यात्राओं से आमतौर पर दूर रहने की सलाह दी जाती है।

हाई–रिस्क प्रेग्नेंसी में सफर करते समय सावधानियां बरतें

– सफर करते समय एक बार अपने गायनेकोलॉजिस्ट से सलाह जरूर लें और इस बात का ध्यान रखें कि डॉक्टर की लिखित अनुमति जरूर हो।

– अगर यात्रा ज्यादा लंबी है, खराब सड़कें और ज्यादा झटके वाले सफर से बचना जरुरी है। दूरस्थ स्थान पर जाने के लिए ब्रेक जरुर लें।

– यात्रा के दौरान पर्याप्त पानी पीते रहना काफी जरुरी है। क्योंकि डिहाइड्रेशन से प्री–टर्म लेबर का रिस्क बढ़ता है।

– सफर में ढीले, कॉटन कपड़े और सपोर्टिव फुटवियर पहनें ताकि सूजन न हो।

– हर एक से दो घंटे में वॉक करें या पैरों को जरूर हिलाएं ताकि ब्लड क्लॉट बनने का रिस्क कम हो।

– इसके साथ ही समय पर अपनी दवाइयां लें। प्रिस्क्रिप्शन, अल्ट्रासाउंड और रिपोर्ट्स हमेशा अपने साथ रखें।

– इस बात का ध्यान रखें कि जहां जा रहे है, वहां के नजदीकी अच्छे अस्पताल और इमरजेंसी नंबर पहले से नोट कर लें।

– अपने साथ कोई भी भारी बैग या वजन उठाने से बचना जरुरी है और चाहे वह छोटा ही क्यों न लगे।

फ्लाइट में सफर करते समय बरतें ये सावधानी

हर एयरलाइन में प्रेग्नेंसी से संबंधित अपनी अलग नियम और शर्तें तय करती है इसलिए यात्रा से पहले यह जानना जरूरी है कि किस जेस्टेशनल उम्र तक उड़ान की अनुमति है। अधिकतर स्थितियों में डॉक्टर द्वारा जारी किया गया फिट–टू–फ्लाई प्रमाण पत्र आवश्यक होता है जो आमतौर पर उड़ान से तीन दिन के भीतर बना होना चाहिए। एयर ट्रैवल की योजना बनाने से पहले एयरलाइन और अपने डॉक्टर दोनों से पुष्टि करना बेहद जरूरी माना जाता है।

Created by Universal Document Converter

जानलेवा प्रदूषण, सरकारों की शर्मनाक नाकामी

ललित गर्ग

भारत की वायु में जहर घुल चुका है। हाल ही में चिकित्सा जनरल में प्रकाशित एक अध्ययन ने यह निष्कर्ष दिया है कि 2010 की तुलना में 2022 में हवा में जानलेवा साबित होने वाले पीएम 2.5 कणों की मात्रा 38 प्रतिशत बढ़ चुकी है। इस वृद्धि का परिणाम यह हुआ कि भारत में सत्रह लाख से अधिक लोगों की अकाल मृत्यु वायु प्रदूषण के कारण हुई। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि मानवता की उस सांस का हिसाब है जो हमारे शहरों, गांवों और जीवन से हर दिन छीनी जा रही है। प्रदूषण अब केवल स्वास्थ्य का प्रश्न नहीं रह गया है, यह हमारे विकास, अर्थव्यवस्था और सामाजिक न्याय के ढांचे पर गहरी चोट कर रहा है। यह भी सहज ही समझा जा सकता है कि 2022 की तुलना में अब वायु प्रदूषण ने और गंभीर रूप लेते हुए जानेलेवा हो गया है, क्योंकि बीते तीन वर्षों में इस समस्या के समाधान के लिए ठोस उपाय किए ही नहीं गए। इसका प्रमाण यह है कि इन दिनों दिल्ली समेत देश के अनेक शहर बुरी तरह प्रदूषण की चपेट में हैं। यह न केवल सरकार की शर्मनाक नाकामी है बल्कि भयावह और बेहद दर्दनाक भी है।

'द लेंसेट काउंटडाउन ऑन हेल्थ ऐंड क्लाइमेट चेंज 2025' रिपोर्ट केवल तथ्य नहीं, एक गंभीर चेतावनी है। लैंसेट की रिपोर्ट ही नहीं, अलग–अलग वर्षों में विभिन्न संस्थाओं के अध्ययनों ने भी कुछ इसी तरह के चिन्ताजनक आंकड़े पेश किए हैं। भारत की विशाल आबादी के कारण भी यह संख्या बड़ी हो सकती है, मगर यह समस्या गंभीर चिंतन और तत्काल निवारक कदम उठाए जाने की मांग करती है। भारत में प्रदूषण केवल औद्योगिक उत्पादन या वाहनों की बढ़ती संख्या से नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली, असंतुलित शहरीकरण और अनियोजित निर्माण से भी बढ़ रहा है। हर शहर में धूल, धुआं और अव्यवस्था की परतें जमी हैं। निर्माण स्थलों से उठने वाली धूल, खेतों में पराली जलाने की आदत, घरेलू ईंधनों का अंधाधुंध उपयोग और बढ़ते वाहनों की भीड़–ये सब मिलकर वातावरण को घुटनभरा एवं जानलेवा बना रहे हैं। हमारे शहर अब सां. सों के शत्रु बन गए हैं। बढ़ते प्रदूषण की पीड़ा नीति–निर्धारकों से नहीं, उन लोगों से पूछिए, जो खांसते–खांसते बेदम हो जाते हैं और आखिरकार कई के फेफड़े–हृदय उनका साथ देना बंद कर देते हैं। विडंबना यह है कि इनमें से ज्यादातर उस गलती की सजा भुगतने को अभिशप्त हैं, जो उन्होंने नहीं की।

वायु में मौजूद सूक्ष्म कण अब हर सांस में जहर बनकर प्रवेश कर रहे हैं। इस प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता है। कोयला, पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधनों ने न केवल हवा को जहरीला बनाया है बल्कि हमारे अस्तित्व की नींव को भी कमजोर कर दिया है। इन स्रोतों से होने वाले उत्सर्जन के कारण लाखों लोग असमय

काल के ग्रास बन रहे हैं, लेकिन ऊर्जा नीति में सुधार की गति अत्यंत धीमी है। सरकारें बार–बार स्वच्छ ऊर्जा की बात करती हैं, योजनाएं बनाती हैं, लक्ष्य घोषित करती हैं, पर उनका क्रियान्वयन न के बराबर होता है। सबसे गंभीर तथ्य यह है कि इस प्रदूषण के शिकार सबसे अधिक वे लोग हैं जो इसके निर्माता नहीं हैं। गरीब मजदूर, झुग्गियों में रहने वाले, बच्चे और बुजुर्ग–ये सभी उस वायु के दंश झेल रहे हैं जिसका लाभ अमीरों ने उठाया है। एक ताजा अंत. रराष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार, अमीर तबके का प्रदूषण में योगदान अत्यधिक है। पेरिस स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की 'जलवायु असमानता रिपोर्ट 2025' बताती है कि विश्व के सबसे धनी लोग अपनी संपत्ति और निवेशों के माध्यम से जलवायु संकट को बढ़ा रहे हैं। वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के 41 प्रतिशत के लिए निजी पूंजी जिम्मेदार है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रदूषण का असली निर्माता संपन्न वर्ग है, जबकि उसकी कीमत गरीब वर्ग अपनी सां. सों और जीवन से चुका रहा है। यह असमानता केवल आय की नहीं, बल्कि पर्यावरणीय न्याय की भी है। अमीरों के पास बड़े वाहन हैं, विशाल भवन हैं, आलीशान जीवनशैली है, और वे जीवाश्म ईंधनों पर आधारित उद्योगों में निवेश करते हैं। दूसरी ओर, गरीबों के पास न तो स्वच्छ ऊर्जा है, न शुद्ध हवा। जो अमीर लोग निजी विमानों और विलासितापूर्ण संसाधनों का उपयोग करते हैं, वे एक सामान्य नागरिक की तुलना में सैकड़ों गुना अधिक प्रदूषण फैलाते हैं। यह असंतुलन हमारे समाज को विषमता और अन्याय की ओर धकेल रहा है।

सरकारों की नीतिगत विफलता इस त्रासदी का दूसरा बड़ा कारण है। प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए योजनाएं तो बनती हैं, पर उनमें न तो स्थायित्व होता है, न गंभीरता। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं, निगरानी तंत्र कमजोर है, और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर कार्रवाई नगण्य है। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच जिम्मेदारी का बंटवारा अस्पष्ट है। हर साल सर्दियों में दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य शहरों की हवा जहरीली हो जाती है, तब कुछ दिन के लिए 'आपात कदम' उठाए जाते हैं, पर जैसे ही धुंध छंटती है, सब कुछ फिर पहले जैसा हो जाता है। नीतियों में पारदर्शिता का अभाव और उद्योगपतियों का दबाव भी एक गहरी समस्या है। कोयला आधारित उद्योगा. ', पेट्रोलियम कंपनियों और निर्माण व्यवसाय से जुड़ी लॉबी सरकारों पर ऐसा प्रभाव बनाए रखती हैं कि कठोर कदम उठाना राजनीतिक दृष्टि से असुविधाजनक बन जाता है। स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण को हमेशा 'महंगा विकल्प' बताकर टाला जाता है, जबकि वास्तव में यह निवेश मानव जीवन और पर्यावरण की सुरक्षा में है।

वायु प्रदूषण का संकट केवल वातावरण में धूल और धुएं का मामला नहीं है, यह आर्थिक अन्याय, राजनीतिक असंवेदनशीलता और सामा. जिक उदासीनता का प्रतीक बन चुका है। जो सरकारें जनजीवन सुधारने का वादा करती हैं, वे हवा की गुणवत्ता सुधारने में विफल रही हैं। आंकड़े बताते हैं कि वायु प्रदूषण से भारत की अर्थव्यवस्था को हर साल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग दस प्रतिशत तक का नुकसान हो रहा है। यह नुकसान केवल पैसों में नहीं, बल्कि मानव संसाधन की हानि, स्वास्थ्य पर बोझ और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट के रूप में भी दिखाई देता है। अब समय है कि इस संकट को केवल पर्यावरणीय मुद्दा न मानकर एक सामा. जिक और नैतिक चुनौती के रूप में देखा जाए। हवा का अधिकार हर नागरिक का मौलिक अधिकार है, लेकिन यह अधिकार धीरे–धीरे छिनता जा रहा है। अमीरों को अपनी जीवनशैली पर संयम लाना होगा, अपने निवेशों को स्वच्छ ऊर्जा की ओर मोड़ना होगा, और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों से दूरी बनानी होगी। सरक. ारों को सख्त नीति बनानी चाहिए, जो न केवल प्रदूषण फैलाने वालों को दंडित करे बल्कि स्वच्छ प्रौद्योगिकी अपनाने वालों को प्रोत्साहन दे।

नागरिकों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। जब तक जनता स्वयं इस समस्या को अपने जीवन का हिस्सा मानकर आवाज नहीं उठाएगी, तब तक राजनी. तिक इच्छाशक्ति जागृत नहीं होगी। हर व्यक्ति को यह समझना होगा कि प्रदूषण से बचाव केवल मास्क लगाने से नहीं होगा, बल्कि सोच और जीवनशैली बदलने से होगा। वायु प्रदूषण एक सामूहिक अपराध बन गया है जिसमें अपराधी कम और पीड़ित अधिक हैं। अब यह वक्त है जब विकास की परिभाषा में स्वच्छ हवा और सुरक्षित वातावरण को सबसे ऊपर रखा जाए। सरकारें यदि सचमुच राष्ट्र की समृद्धि चाहती हैं, नया भारत–विक. सित भारत बनाना चाहती है तो उन्हें सांसों की सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। अमीर तबके को भी यह समझना होगा कि जिस हवा को वे अपने निवेशों से दूषित कर रहे हैं, वह अंततः उन्हीं की अगली पीढ़ियों की सांसों को रोक देगी। आज आवश्यकता है एक ऐसी राष्ट्रीय चेतना की, जो कहे कि हवा किसी वर्ग की नहीं, समस्त जीवन की संपत्ति है। जब तक यह चेतना जागृत नहीं होती, तब तक हर आंकड़ा, हर रिपोर्ट और हर योजना केवल दस्तावेज बनकर रह जाएगी, और भारत की हवाएं यूं ही जहर बनती रहेंगी। वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण को लेकर किसी किस्म की उदासीनता देश और मानवता के साथ अन्याय होगा।

चौथाई सदी में कितना बदला धान का कटोरा

उमेश चतुर्वेदी

इक्कीसवीं सदी की आहट सुनाई देने लगी थी..उन दिनों इन पंक्तियों का लेखक मध्य प्रदेश–राजस्थान के एक बड़े अखबार का दिल्ली में संवाददाता था..उस दिन खबरों का सूखा था..उसे दूर करने की नीयत से इन पंक्तियों का लेखक धरनों के लिए विख्यात जंतर–मंतर पर जा पहुंचा...वहां जाकर देखा, मध्य प्रदेश से अलग करके छत्तीसगढ़ राज्य बनाने की मांग को लेकर साधारण–सा व्यक्ति धरने पर बैठा था..साथ में गिनती के विश्वासपात्र ही बैठे थे..पता चला कि धरनारत उस व्यक्ति के पास खाने तक के पैसे नहीं थे.. उनसे पता चली कि रात को रोजाना अपनी क्षुधा शांत करने के लिए पास ही स्थित गुरूद्वारा बंगला साहिब या फिर रकाब जाते और वहां के लंगर से अपनी भूख शांत करते थे..उनके साथियों का भी यही हाल था.. वनोपज और प्राकृतिक संसाधना. ' से युक्त राज्य का धरना और उसे सहारा लंगर का..मर्म को छूने वाली वह खबर थी..खबर लिखी भी, 'लंगर के सहारे चलता अलग राज्य का धरना'. खबर छपते ही रायपुर और उसके आस–पास हलचल मच गई। तब आज की तरह फोन नहीं थे..लेकिन लोग उस धरना देने वाले व्यक्ति का पता पूछने और उन तक अपनी श्रद्धा रकम पहुंचाने की जैसे होड़ लग गई..

एक नवंबर के दिन छत्तीसगढ़ की उम्र चौथाई सदी पूरी कर चुकी है। इस राज्य के जन्म के लिए धरनारत रहे उस व्यक्ति का नाम लोग भूल चुके है। राजने. ताओं की लंबी फेहरिस्त राजनी. तिक क्षितिज पर अपनी अच्छी–बुरी उपलब्धियों के साथ चमक रही है। लेकिन दाऊ आनंद अग्रवाल का संघर्ष कहीं खो गया है। पता नहीं छत्तीसगढ़ के लोगों, विशेषकर प्रबुद्ध लोगा. ' को उनका नाम याद है भी या नहीं। उन दिनों छत्तीसगढ़ के एक प्रमुख दैनिक के दिल्ली ब्यूरो प्रमुख रहे विनोद वर्मा बताते है कि दाऊ के एक वक्त का भोजन अखबारों के प्रमुख दफ्तर आईएनएस बिल्डिंग की कैंटीन में होता था..जिसका खर्च विनोद वर्मा उठाते थे। यहां बता दें कि विनोद वर्मा बाद के दिनों में छत्तीसगढ़ के कांग्रेसी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के राजनीतिक सलाहकार रहे।

आनंद अग्रवाल को ही क्यों, बहुत लोगों को पवन दीवान की भी याद नहीं होगी। पवन दीवान बुनियादी रूप से समाजवादी नेता थे। यह बात और है कि उन्होंने बाद में राजनीतिक दलों में खूब आवाजाही की। कभी बीजेपी के कमलधारक बने तो कभी कांग्रेस के हाथ का साथ लिया। लेकिन छत्तीसगढ़ को अलग राज्य बनाने के लिए बड़ा आंदोलन उन्होंने किया था। दिल्ली के जंतर–मंतर पर उन्होंने बड़ा प्रदर्शन भी किया था। छत्तीसगढ़ अब अलग राज्य के रूप में फल–फूल रहा है। लेकिन उसे मध्य प्रदेश से अलग राज्य बनाने की पहली बार ठोस मांग करने वाले खूबचंद बघेल के नाम को कितने लोग याद करते है, पता नहीं। पिछली सदी के साठ के दशक के आखिरी वर्षों में उन्होंने छत्तीसगढ़ भ्रातृ संघ बनाया था और अलग राज्य की उन्होंने मांग को पहली बार ताकतवर सुर दिया था। जिन्होंने भी छत्तीसगढ़ को अलग राज्य बनाने की मांग रखी, उनकी मांग का आधार था छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक संसाधन, वनोपज और खूबसूरत नजारे। सबका मानना था कि अपने प्राकृतिक सौंदर्य, वनोपज और खनिजों की वजह से छत्तीसगढ़ कहीं ज्यादा समृद्ध है, लेकिन उसका फायदा उसके निवासियों को नहीं मिल रहा है। उस पर कब्जा राज्य के दूसरे इलाके के लोगों और राजनीतिक वर्चस्व वाली ताकतों को मिल रहा है। वैसे छत्तीसगढ़ को अलग राज्य बनाने की मांग 1924 में रायपुर में हुई थी। लेकिन तब देश गुलाम था, अंग्रेजी दासता से मुक्ति तब पहला उद्देश्य था। लिहाजा यह मांग सिरे से परवान नहीं चढ़ पाई।

दिलचस्प यह है कि जिन्होंने अलग राज्य की मांग रखी, राजनीतिक रूप से उनका आज कोई अस्तित्व ही नहीं है। इसे बिडंबना कहें कि कुछ और, यह स्थिति छत्तीसगढ़ के साथ बने उत्तराखंड राज्य की भी है। उत्तराखंड को उत्तर प्रदेश से अलग राज्य बनाने की मांग को लेकर सबसे जोरदार आंदोलन उत्तराखंड क्रांति दल ने चलाया, उसकी कीमत भी चुकाई। मुजफ्फरनगर कांड उस कीमत की चरम परिणति कही जा

सकती है। लेकिन उत्तराखंड में आज उत्तराखंड क्रांति दल हाशिए पर है।

छत्तीसगढ़ से जुड़ा एक और वाकया याद आ रहा है। छत्तीसगढ़ में पहली बार विधानसभा चुनाव 2003 में हो रहा था। उसकी तैयारी भारतीय जनता पार्टी ने एक साल पहले ही शुरू कर दी थी। उन दिना. ' केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी की अगुआई में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार थी। उस सरकार में रमन सिंह इस्पात राज्य मंत्री थे। बीजेपी ने तय किया कि उन्हें चुनावी तैयारी के लिए छत्तीसगढ़ भेजा जाए। रमन सिंह छत्तीसगढ़ जाना नहीं चाहते थे। दिल्ली के ललित होटल के एक कार्यक्रम में दबी जुबान से बीजेपी के इस फैसले का विरोध भी जताया था। शायद उन्हें अपने भावी किस्मत का पता नहीं था। भारी मन से वे छत्तीसगढ़ गए, लेकिन विधानसभा चुनावों में उनकी अगुआई में भारी जीत मिली। मुख्यमंत्री बने और लगातार तीन कार्यकाल तक मुख्यमंत्री रहने का उन्हें स्वर्णिम मौका मिला।

छत्तीसगढ़ ने तब से लेकर अब तक लंबी यात्रा कर ली है। छत्तीसगढ़ की पच्चीस साल की इस यात्रा में सत्रह साल तक बीजेपी का शासन रहा है, जबकि महज आठ साल कांग्रेस की सरकार रही। छत्तीसगढ़ जब अलग हुआ था तो उसका बजट महज पांच हजार सात सौ करोड़ का था। आज राज्य का बजट एक लाख 65 हजार सौ करोड़ तक पहुंच गया है। राज्य की मौजूदा विष्णुदेव साय सरकार इसे गति यानी सुशासन, त्वरित अवसंरचना, प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास की थीम पर आधारित बजट बता रही है। छत्तीसगढ़ राज्य जब बना तो वहां सिर्फ एक मेडिकल कॉलेज था, वहां एकमात्र मेडिकल कॉलेज पंडित जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल मेडिकल कॉलेज, रायपुर था। यह कॉलेज 1963 में स्थापित किया गया था और इसे रायपुर मेडिकल कॉलेज के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन छत्तीसगढ़ में आज 14 मेडिकल कॉलेज है, जिनमें 11 सरकारी, एक एम्स और 3 निजी कॉलेज शामिल है। इसके अतिरिक्त, राज्य में 4 नए सरकारी मेडिकल कॉलेजों के निर्माण की घोषणा की जा चुकी है। ये कॉलेज बन गए तो उनकी संख्या 18 हो जाएगी। कह सकते है कि राज्य ने मेडिकल के क्षेत्र में बड़ी छलांग लगा ली है।

छत्तीसगढ़ को लेकर एक छवि यह है कि वह छोटा राज्य है। लेकिन हकीकत ऐसा नहीं है। उसे छोटा मानने की वजह उसकी अपेक्षाकृत कम जनसंख्या है। साल 2011 की जनगणना के अनुसार, राज्य की जनसंख्या दो करोड़ 55 लाख से ज्यादा है। अनुमान है कि इन दिनों राज्य की जनसंख्या तीन करोड़ आठ लाख के करीब है। आम धारणा है कि छत्तीसगढ़ बिहार से भी छोटा है। बिहार की जनसंख्या करीब तेरह करोड़ से कुछ ज्यादा है। लेकिन हकीकत यह है कि छत्तीसगढ़ रकबा के लिहाज से बिहार से डेढ़ गुना बड़ा राज्य है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के सलाहकार पंकज झा कहते है कि छोटा राज्य होने की छवि के चलते छत्तीसगढ़ को भारतीय राजनीति का ज्यादातर हिस्सा उसे कमतर आंकता है। इस छवि को तोड़ना उनकी सरकार की प्राथमिकता है।

जब छत्तीसगढ़ बना था, तब उसके हिस्से मध्य प्रदेश के 16 जिले आए थे। लेकिन आज छत्तीसगढ़ में 33 जिले है। खूबसूरत झरने, प्राकृतिक जंगलों और खूबसूरत पहाड़ों के प्रदेश छत्तीसगढ़ में कोयला, लोहा और टिन का प्रचुर खनिज भंडार है। देश का तीसरा सबसे बड़ा वनाच्छादित राज्य छत्तीसगढ़ है, जिसका कुल 44.24 प्रतिशत हिस्सा जंगलों से ढंका पड़ा है। जाहिर है कि इनकी वजह से जहां पर्यावरण की रक्षा हो रही है, वहीं जंगल पर आधारित जनजातियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा रहा है। छत्तीसगढ़ एक नए राज्य के रूप में अपनी स्थापना के बाद से, शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और अर्थव्यवस्था जैसे कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव से गुजरा है। राज्य की प्रति व्यक्ति आय में लगभग 10 गुना वृद्धि हुई है, राज्य की जीडीपी 21,000 करोड़ डॉलर से बढ़कर लगभग अब करीब 5 लाख करोड़ डॉलर की हो गई है। कभी यहां आने में बैंक हिचकते थे, लेकिन अब यहां बैंको का जाल है। राजमार्ग और रेलवे का नेटवर्क भी राज्य में बहुत बढ़ा है। मध्य प्रदेश से अलग होते वक्त राज्य में महज चार विश्वविद्यालय थे, जिनकी संख्या बढ़कर अब 25 हो चुकी है। पहले नक्सल प्रभावित इलाकों में स्कूलों की भारी कमी थी। लेकिन अब यहां नए स्कूल खोले गए है और पोटाकेबिन, आश्रम और छात्रावास जैसी पहल शुरू की गई है। बस्तर में सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का निर्माण किया गया है, हालाँकि यह अभी अधूरा है। नक्सलवाद के चलते यहां परिवहन ढांचा सुदृढ़ नहीं था। लेकिन अब उसमें भी बदलाव आया है। राज्य में राष्ट्रीय राजमार्गों और रेल लाइनों की लंबाई दोगुनी हो गई है। पहले राज्य की राजधानी रायपुर से सिर्फ छह उड़ानों की सुविधा थी, जो अब बढ़कर 76 हो गई है। बस्तर और सरगुजा में भी हवाई अड्डे बनाए गए है। जगदलपुर में साप्ताहिक आधार पर उड़ीसा और आंध्र प्रदेश के लिए विमान सेवाएं जारी है। राज्य की शुरूआत में जहां बैंक शाखाओं की संख्या 1500 थी, वह अब बढ़कर 6500 हो गई है। छत्तीसगढ़ को उसकी धान की उपज के लिए धान का कटोरा कहा जाता था। अलग राज्य बनने के बाद राज्य में जहां धान की खरीद 5 लाख मीट्रिक टन थी, वह अब बढ़कर 1.5 करोड़ मीट्रिक टन हो गई है। इसी तरह राज्य में बिजली उत्पादन 7300 मेगावाट से बढ़कर 18000 मेगावाट तक पहुंच गया है। राज्य के वनोपज में तेंदूपत्ता का प्रमुख स्थान है। सरकारी स्तर पर तेंदूपत्ता संग्रहण मूल्य को ₹2500 से बढ़ाकर ₹4000 प्रति मानक बोरा कर दिया गया है।

कभी लोहा, कोयला और धान के लिए विख्यात छत्तीसगढ़ अब ऊर्जा, गारमेंट, न्यू डेटा सेंटर और फार्मा के राज्य के रूप में भी उभर चुका है। निश्चित तौर पर इसके लिए राज्य की दोना. ' प्रमुख पार्टियों की सरकारों का योगदान रहा है। आज छत्तीसगढ़ महिला कल्याण, संस्कृति और किसान कल्याण योजनाओं ने भी राज्य की तसवीर बदलने में बड़ी भूमिका निभाई है। अलग राज्य बनने से पहले राज्य की सिंचाई क्षमता 13.28 लाख हेक्टेयर थी, वह अब बढ़कर 21.76 लाख हेक्टेयर पहुंच गई है।राज्य की सालाना कृषि विकास दर 7.8 प्रतिशत हो गई है। पिछले पच्चीस सालों में रायपुर, भिलाई, कोरबा और रायगढ़ राज्य के बड़े औद्योगिक इलाके के रूप में विकसित हुए है। कभी जहां बंदूकों की आवाज गूंजती थी, वहां अब विकास की नई इबारत लिखी जा रही है। राज्य में चहुंओर बदलाव दिख रहा है। अपेक्षाकृ. त सहज माने जाने वाला राज्य का बहुसंख्यक आदिवासी समुदाय भी मुख्यधारा में नजर आ रहा है। गुरूद्वारे के लंगर के सहारे जिस अलग राज्य की मांग राजधानी दिल्ली में परवान चढ़ी थी, वह राज्य अब नई कहानियां लिख रहा है। राजनी. तिक तौर पर राजनीतिक नैरेटिव के हिसाब से सवाल हो सकते है। लेकिन उन सवालों के बावजूद एक तथ्य समान है, वह कि राज्य ने चौथाई सदी में बहुत कुछ हासिल किया है। इसका यह मतलब नहीं कि और कुछ हासिल किया जाना बाकी नहीं है। राज्य के पास जैसी संपदा है, जिस तरह के प्राकृ. तिक स्थल है, उनकी वजह से वहां विकास की अनंत संभावनाएं है। पर्यटन की दिशा में अब भी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है। केरल से कम सुंदर नहीं है छत्तीसगढ़। उस प्राकृतिक सौंदर्य के सैलानी नजरिये से दोहन की काफी गुंजाइश है। उम्मीद की जानी चाहिए कि राज्य इस दिशा में जरूर आगे बढ़ेगा।

Created by Universal Document Converter

एनसी और कांग्रेस से जनता का भरोसा टूटा, पीडीपी ही एकमात्र विश्वसनीय विकल्पः एडवोकेट आसिफ चौधरी

राजौरी विधानसभा प्रभारी ने दूरदराज़ गांवों का दौरा किया, जनता की समस्याएं संबंधित विभागों के समक्ष उठाने का आश्वासन

लद्दाख टुडे ब्यूरो

राजौरी, 27 दिसंबरः राजौरी विधानसभा क्षेत्र के प्रभारी एवं वरिष्ठ नेता एडवोकेट आसिफ चौधरी ने मंगलवार को विधानसभा क्षेत्र 85 के अंतर्गत आने वाले दूरदराज़ गांवों नंगा, नाई, पुलोलियां सहित आसपास के इलाकों का व्यापक दौरा किया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों से मुलाकात की, उनकी समस्याएं सुनीं और भरोसा दिलाया कि जनता से जुड़े वास्तविक मुद्दों को शीघ्र समाधान के लिए संबंधित विभागों के समक्ष उठाया जाएगा।

जनसभाओं को संबोधित करते हुए एडवोकेट आसिफ चौधरी ने कहा कि वर्षों से अधूरे वादों और राजनीतिक उपेक्षा के कारण लोगों का नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस से विश्वास उठ चुका है। उन्होंने कहा कि जनता खुद को ठगा और निराश महसूस कर रही है, क्योंकि उनकी समस्याएं आज भी जस की तस बनी हुई है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ही एकमात्र ऐसी राजनीतिक ताकत है जो लोगों के जख्मों पर मरहम लगा सकती है और उनकी आवाज़ को प्रभावी ढंग से उठा सकती है। "आज जनता के पास पीडीपी के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचा है, जिसने हमेशा हाशिए पर पड़े और आवाज़हीन लोगों के साथ खड़े होकर संघर्ष किया है," उन्होंने कहा।

एडवोकेट आसिफ ने ज़ोर देते हुए कहा कि लोगों को निराशा, कठिनाइयों और हताशा से बाहर निकालने के लिए जमीनी स्तर पर पीडीपी को मज़बूत करना समय की मांग है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे पीडीपी की सदस्यता लेकर पार्टी से सक्रिय रूप से जुड़ें ताकि जनहितों की रक्षा के लिए एक मज़बूत जन आंदोलन खड़ा किया जा सके।

उन्होंने पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती की भी सराहना करते हुए कहा कि वह हर मंच पर पीड़ित जनता की आवाज़ बेखौफ होकर उठा रही हैं और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष के प्रति प्रतिबद्ध है।

इस दौरे का स्थानीय लोगों ने स्वागत किया और उम्मीद जताई कि निरंतर राजनीतिक प्रयासों के माध्यम से उनकी लंबे समय से लंबित समस्याओं पर अब ठोस ध्यान दिया जाएगा।

रंगमंच थिएटर ग्रुप ने राजौरी की सड़कों पर उतारी एचआईवी/एड्स जागरूकता मुहिम

जीएमसी, स्कूलों और बाजारों में प्रभावशाली नुक्कड़ नाटकों के जरिए युवाओं व आम जनता को किया गया जागरूक

लद्दाख टुडे ब्यूरो

राजौरी, 27 दिसंबरः जनस्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने की सराहनीय पहल के तहत रंगमंच थिएटर ग्रुप ने राजौरी जिले के विभिन्न स्थानों पर एचआईवी/एड्स जागरूकता पर आधारित प्रभावशाली नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया। ये कार्यक्रम सरकारी मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) राजौरी, नेशनल पब्लिक स्कूल, दास्सल बाजार तथा सरकारी बॉयज़ हायर सेकेंडरी स्कूल, राजौरी में प्रस्तुत किए गए।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य आम जनता, विशेषकर युवा वर्ग को एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूक करना, इसके रोकथाम के उपायों से अवगत कराना तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। सशक्त संवाद और रोचक प्रस्तुति के माध्यम से कलाकारों ने जटिल विषय को सरल और प्रभावी ढंग से दर्शकों तक पहुंचाया।

नाटकों के दौरान भारत सरकार तथा चिकित्सा विभाग की एचआईवी/एड्स से संबंधित जागरूकता फैलाने, रोकथाम को बढ़ावा देने और जनस्वास्थ्य कार्यक्रमों में निभाई जा रही सक्रिय भूमिका को भी उजागर किया गया।

रंगमंच थिएटर ग्रुप के संस्थापक एवं निदेशक विशाल पहाड़ी के कुशल मार्गदर्शन में यह संस्था पिछले दो दशकों से रंगमंच को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाकर विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरूकता फैलाने का कार्य कर रही है।

नुक्कड़ नाटक का निर्देशन विक्रांत वर्मा ने किया, जबकि कलाकार शिवानी, तनय, रिज़वान, हसीना और ज़फर ने अपनी सशक्त और प्रभावशाली अभिनय से दर्शकों की भरपूर सराहना प्राप्त की। सभी स्थलों पर कार्यक्रम को उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली और दर्शकों ने सामाजिक जागरूकता व जनशिक्षा के क्षेत्र में रंगमंच थिएटर ग्रुप के इस प्रयास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

भारतीय रेलवे की अगले 5 वर्षों में प्रमुख शहरों में रेल गाड़ियों की संचालन क्षमता दोगुनी करने की योजना

प्रमुख शहरों में कोचिंग टर्मिनलों का विस्तार यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने, भीड़भाड़ कम करने और राष्ट्रव्यापी संपर्क सुविधा में सुधार लाने के लिए किया जाएगाः रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

व्यस्त स्टेशनों पर यातायात सुगम बनाने के लिए क्षमता वृद्धि के लाभों को प्राप्त करने हेतु जोन से अल्पकालिक और मध्यम अवधि के उपायों की मांग की गई है

लद्दाख टुडे ब्यूरो

नई दिल्ली। उत्तर रेलवे के 10 रेलवे स्टेशन भी शामिल

यात्रा की मांग में लगातार हो रही तीव्र वृद्धि को देखते हुए, अगले 5 वर्षों में प्रमुख शहरों की नई रेल गाड़ियों के संचालन की क्षमता को वर्तमान स्तर से दोगुना करना आवश्यक है। आगामी वर्षों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वर्तमान बुनियादी ढांचे को मजबूत करना होगा। वर्ष 2030 तक संचालन क्षमता को दोगुना करने के लिए निम्नलिखित कार्य शामिल होंगेः

1. मौजूदा टर्मिनलों को अतिरिक्त प्लेटफॉर्म, स्टेबलिंग लाइन, पिट लाइन और पर्याप्त शंटिंग सुविधाओं से सुसज्जित करना।

2. शहरी क्षेत्र में और उसके आसपास नए टर्मिनलों की पहचान और निर्माण करना।

3. मेगा कोचिंग कॉम्प्लेक्स सहित रखरखाव सुविधाएं।

4. विभिन्न स्थानों पर रेल गाड़ियों की बढ़ती संख्या की व्यवस्था करने के लिए यातायात सुविधा कार्यों, सिग्नलिंग उन्नयन और मल्टीट्रैकिंग के माध्यम से अनुभागीय क्षमता में वृद्धि करना।

उत्तर रेलवे के 10 रेलवे स्टेशन को भी इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेड के लिए चिह्नित किया गया है। उत्तर रेलवे के चिह्नित दस स्टेशन निम्न हैंः

दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, अयोध्या, चंडीगढ़, लुधियाना, अमृतसर, जम्मू, हरिद्वार, बरेली।

क्षमता को वर्ष 2030 तक दोगुना करने की योजना है, लेकिन यह आशा है कि अगले 5 वर्षों में क्षमता में क्रमिक वृद्धि की जाएगी ताकि क्षमता वृद्धि के लाभ तुरंत प्राप्त किए जा सकें। इससे आने वाले वर्षों में यातायात की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने में सहायता मिलेगी। योजना में कार्यों को तीन श्रेणियों, अर्थात् तत्काल, अल्पकालिक और दीर्घकालिक में वर्गीकृत किया जाएगा।

नई दिल्ली स्टेशन के रीडेवलपमेंट काम का प्लान इस प्रकार हैः

मौजूदा स्टेशन बिल्डिंग को गिराकर प्लेटफॉर्म नंबर 01 और 16 के पास दो स्टेशन बिल्डिंग बनाई जाएंगी।

नई स्टेशन बिल्डिंग का एरिया मौजूदा 17274 वर्ग मीटर बिल्ट–अप एरिया के मुकाबले लगभग 109000 वर्ग मीटर होगा। अभी

रोजाना चार लाख यात्रियों को संभाला जाता है। नए स्टेशन को रोजाना सात लाख यात्रियों को संभालने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन बिल्डिंगों में उचित होल्डिंग एरिया, एलिवेटेड रोड से स्टेशन बिल्डिंग तक यात्रियों के आने–जाने के लिए एप्रन

एरिया भी शामिल होंगे। इन

बिल्डिंगों में पार्किंग की सुविधा होगी। शहर के ट्रैफिक और मेट्रो के विभिन्न तरीकों के साथ इंटीग्रेशन की योजना बनाई गई है।

वर्तमान में जम्मूतवी स्टेशन में अपग्रेड कार्य प्रगति पर हैं जिसमें अतिरिक्त पिट लाइन, 4 अतिरिक्त प्लेटफॉर्म, 7 अतिरिक्त स्टेबलिंग लाइन का निर्माण किया जा रहा हैं। इससे ज्यादा ट्रेन संचालन संभव होगा। ट्रेनों की गति में भी इजाफा होगा और ट्रेन मेंटिनेंस भी बेहतर होगी।

बरेली जंक्शन पर भी यार्ड रिमॉडलिंग प्रस्तावित हैं। यार्ड रिमॉडलिंग के पश्चात, यह स्टेशन 24 कोच वाली ट्रेन का परिचालन आसानी से कर सकेगा। इसके अलावा, सिक लाइन, पिट लाइन का विस्तार होगा। इन कार्यों से ज्यादा ट्रेनों का संचालन किया जा सकेगा, साथ ही ट्रेन मेंटिनेंस का कार्य और बेहतर होगा।

केंद्रीय रेल मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, "हम यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए विभिन्न शहरों में कोचिंग टर्मिनलों का विस्तार कर रहे हैं और अनुभागीय एवं परिचालन क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं। इस कदम से हमारे रेलवे नेटवर्क का उन्नयन होगा और राष्ट्रव्यापी संपर्क सुविधा में सुधार होगा।"

Printer, Publisher, Owner, Editor by: Sanktha Prasad Singh Published from: GH Road Skara, Near Ladakh Public School, Leh (Ladakh) - 194104, Published from: Ladakh Imperial Printing press, Gh Skara, Near Ladakh Public School, Leh Ladakh, 194104, Mob.: Mob.: 9818069272, 8287390112, Email: ladakhtoday@gmail.com

**All disputes are subject to the exclusive jurisdiction of competent courts and forums in Leh - city.

Created by Universal Document Converter